INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

(Rajasthan Administrative Service)

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग – I

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) प्रारंभिक परीक्षा हेतु** " को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Order Link - https://bit.ly/ras-pre-notes

WhatsApp Link- https://wa.link/bc7sin

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

राजस्थान का इतिहास		
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	1
2.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं) • पुरापाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक	20
3.	ऐतिहासिक राजस्थान • प्राचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति	31
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां • गुहिल • प्रतिहार • चौहान • परमार • राठौड़ • सिसोदिया • कच्छावा	38
5.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था	96
6.	आधुनिक राजस्थान	112
7.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	134
8.	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन	144
9.	राजस्थान का एकीकरण	156
कला एवं संस्कृति		
1.	राजस्थान की वास्तु परम्परा • मंदिर • किले	160

	• महल	
2.	चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ और हस्तशिल्प	196
3.	प्रदर्शन कला • शास्त्रीय संगीत • शास्त्रीय नृत्य, • लोक संगीत एवं वाद्ययन्त्र • लोक नृत्य एवं नाट्य	218
4.	भाषा एवं साहित्य	253
5.	धार्मिक जीवन • धार्मिक समुदाय • राजस्थान में संत संप्रदाय	266
6.	राजस्थान के लोक देवी - देवता	275
7.	राजस्थान में सामाजिक जीवन - मेले एवं त्यौहार	286
8.	सामाजिक रीति रिवाज, परम्पराएँ	297
9.	वेशभूषा एवं आभूषण	302
10.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	305

अध्याय – 1

राजस्थान इतिहास के स्रोत

परिचय -

सामान्यतः इतिहासकार द्वारा अतीत की घटनाओं का गहन अध्ययन करके मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है।

इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वे एक इतिहासकार थे।

हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई.पू.), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने अपने इतिहास का विषय पेलोपोनेसियन युद्ध को बनाया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिस्टोरिका थी।

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है। मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं । इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपि कहते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी । इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं । इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है। जिसमें ताम्रपाषाण (Chalcolithic), कांस्य (Bronze) और लौह युग (Iron Age) के शुरुआती चरण शामिल हैं, जो लगभग 7000 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व तक माने जाते हैं।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है । जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक काल जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है। प्राचीन इतिहास के स्रोत – पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत।

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-**

  इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है ।

  भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं।

  महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय संहिता" था।

- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं । वे 1818 से 1821 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनाल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है।
- कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।
- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है ।
- तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी **भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।**
- शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

अशोक के अभिलेख :-

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी (कोटपूतली-बहरोड़) से मिले हैं।

- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टेन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :-

- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीनतम अभिलेख** है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख **केकड़ी जिले** की भिनाय तहसील के **बड़ली गाँव** के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह **अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।**

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ (सिरोही) से प्राप्त हुआ है।
- इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।
- शिलालेख में मेवाड़ के गुहिल वंश शासक शिलादित्य का उल्लेख है ।

मानमोरी का अभिलेख :-

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके **रचयिता पुष्य** तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।
- इस अभिलेख में **'अमृत मंथन'** का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों **(महेश्वर, भीम, भोज एवं मान)** के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डोर अभिलेख :-

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.):-

- प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-

- यह बड़वा (अंता तहसील, बारां जिला) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासकों बल, सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- यह 3 यूप पर खुदा हुआ है ।

कणसवा का अभिलेख :-

- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।
- **राजा धवल को अंतिम मौर्य वंशी राजा माना जाता है ।**

आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-

- 944 ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।
- यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।
- इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-

- जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक **चोचिंगदेव** के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-

- यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।
- इस अभिलेख में **'बापा'** से **'महाराणा समरसिंह'** तक की वंशावली का उल्लेख है।
- इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।

किराडू का लेख :-

- 1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।
- इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
- इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

सांडेराव का लेख :-

- 1164 ई. का यह लेख देसूरी के पास सांडेराव के महावीर जैन मंदिर में उत्कीर्ण है।
- यह लेख कल्हणदेव के समय का है जिसमें उसके परिवार द्वारा मंदिर के लिए दिये गए दान का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख में उस समय के विभिन्न करों व भूमि की नाप के बारे में जानकारी मिलती है।

श्रृंगी ऋषि का लेख :-

- 1428 ई. का यह लेख मेवाड़ के एकलिंगजी के पास श्रृंगी ऋषि नामक स्थान पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण है, जिसकी भाषा संस्कृत है। इस लेख के रचनाकार '**कविराज वाणीविलास योगेश्वर**' थे एवं उत्कीर्णकर्ता हद्दा के पुत्र पन्ना थे।
- यह महाराणा मोकल के समय का है जिसमें राणा हम्मीर से मोकल तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस लेख में महाराणा मोकल द्वारा एकलिंगजी मंदिर के चारों ओर दीवार बनवाने तथा नागौर शासक फिरोज खाँ एवं गुजरात शासक अहमद खाँ को युद्ध में पराजित करने का उल्लेख है।
- इस लेख में राणा लाखा द्वारा काशी, प्रयाग व गया (त्रिस्थली) की यात्रा करने का उल्लेख भी मिलता है।

आमेर का लेख :-

- 1612 ई. में संस्कृत तथा नागरी भाषाओं में उत्कीर्ण इस लेख से कच्छवाहा शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस लेख में कच्छवाहा वंश को '**रघुवंश तिलक**' कहा गया है। इस लेख में निजाम शब्द को प्रांतीय विभाग के रूप में उल्लेखित किया गया है।
- **इसमें मानसिंह को भगवन्तदास का पुत्र बताया गया है।**

बरबथ का लेख :-

- 1613-14 ई. के इस लेख में मुग़ल शासक अकबर की पत्नी मरियम-उज-ज़मानी द्वारा निर्मित बरबथ बाग एवं बयाना बावड़ी का उल्लेख मिलता है। **यह मुग़ल राजपूत वैवाहिक संबंध का बोध कराता है।**

सांभर का लेख (1634 ई.):-

- यह लेख एक सराय के दरवाजे पर हिन्दी भाषा में उत्कीर्ण है।
- इसमें अकबर द्वारा इस सराय के निर्माण करने तथा शाहजहाँ द्वारा 1634 ई. में इसका जीर्णोद्वार करने का उल्लेख है। इसकी भाषा हिन्दी है।

किणसरिया लेख (999 ई.):-

- संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण यह लेख **डीडवाना-कुचामन** के किणसरिया गाँव में अंकित है।
- इस लेख में चौहान वंश के शासक वाक् पतिराज, सिंहराज तथा दुर्लभराज की विजयों व उपलब्धियों का वर्णन है।
- दूसरे भाग में दधीचि वंश के चच्च द्वारा मंदिर बनाने का उल्लेख है।

भ्रमरमाता का लेख :-

- प्रतापगढ़ जिले के छोटी सादड़ी के भ्रमर माता मंदिर से प्राप्त 490 ई. का शिलालेख 5वीं सदी की राजनीतिक स्थिति एवं प्रारंभिक कालीन सामन्त प्रथा के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करता है।
- इस शिलालेख में गौर वंश एवं औलिकार वंश के शासकों का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख का उत्कीर्णक ब्रह्मसोम था।

पाणाहेड़ा का लेख (1059 ई.) :-

- बाँसवाड़ा के पाणाहेड़ा गाँव से प्राप्त लेख।
- इस लेख में वागड़ एवं मालवा के परमार वंश के राजाओं (मुंज, सिंधुराज एवं भोज) की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।

नांदसा यूप स्तम्भ लेख (225 ई.):-

- भीलवाड़ा जिले के नांदसा गाँव से प्राप्त स्तम्भ लेख।
- यह स्तम्भ लेख 'सोम' द्वारा स्थापित है।
- इस स्तम्भ लेख से उत्तरी भारत में प्रचलित पौराणिक यज्ञों के बारे में जानकारी मिलती है।

बर्नाला यूप स्तम्भ लेख (227 ई.):-

- यह स्तम्भ लेख जयपुर रियासत के बरनाला ग्राम में स्थित था।
- बर्नाला (जयपुर ग्रामीण) से प्राप्त।
- वर्तमान में आमेर संग्रहालय में सुरक्षित।

बिचपुरिया यूप स्तम्भ लेख (274 ई.):-

- यह जयपुर जिले के उणियारा ठिकाने से प्राप्त।
- वर्तमान में यह टोंक जिले में है।

तलेटी मस्जिद का लेख (1420 ई.):-

- बयाना (भरतपुर) से प्राप्त।
- इस मस्जिद का निर्माण मलिक मौज्जम ने करवाया था। यह 'औढ़ खाँ' के समय का अभिलेख है।

गुदड़ी बाजार की मस्जिद का लेख (1741 ई.) :-

- डीडवाना (डीडवाना-कुचामन) से प्राप्त लेख।

रसिया की छतरी का लेख (1274 ई.):-

- चित्तौड़ दुर्ग में स्थित इस लेख में 13वीं सदी के मेवाड़ की प्रारम्भिक स्थिति के बारे में तथा दास प्रथा व अस्पृश्यता की स्थिति की जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक **प्रियपटु तथा सूत्रधार** सज्जन था।

घटियाला के शिलालेख (861 ई.):-

- यह शिलालेख फलौदी में घटियाला में एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण है जिसमें प्रतिहार शासक कक्कुक के बारे में उल्लेख किया गया है।
- इसमें रोहिलिद्ध से कक्कुक तक प्रतिहार शासकों की वंशावली मिलती है।
- इस शिलालेख से कक्कुक द्वारा आभीरों को परास्त करने की जानकारी मिलती है।
- इसमें मग जाति के ब्राह्मणों का उल्लेख मिलता है।
- कक्कुक द्वारा यह शिलालेख उत्कीर्ण करवाया गया है जिसका रचयिता मग तथा उत्कीर्णकर्ता कृष्णेश्वर था।
- राजस्थान में पहली बार सती प्रथा की जानकारी देता है।

- इस पुस्तकालय की स्थापना 1983 ई. में संत हरवंश सिंह निर्मल द्वारा की गई।

अम्बेडकर पीठ

- 2007 में मूण्डला (जयपुर) में स्थापित ।
- **जिनभद्र सूरी ज्ञान भण्डार** जैसलमेर के सोनारगढ़ दुर्ग में स्थित है ।
- इसमें जैन ग्रंथों, हस्तलिपियों एवं दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है।

भवानी परमानंद राजकीय पुस्तकालय

- झालावाड़ में स्थित है ।
- इसकी स्थापना वर्ष **1911** में झालावाड़ के राजा भवानी सिंह ने करवाई थी।
- पुस्तकालय का नाम राजा और तत्कालीन राज्य के दीवान **परमानंद चतुर्वेदी** के नाम पर रखा गया था।

राजकीय संग्रहालय (सीकर)

- 28 जून, 2006 को स्थापित।
- इस संग्रहालय में गणेश्वर से प्राप्त बाणग्र, मछली पकड़ने के कांटे, ताम्र उपकरण, चूड़ियाँ, मनके, ताम्र कुल्हाड़ियाँ एवं अलंकृत मृद्भाण्ड सुरक्षित हैं।
- इस संग्रहालय को **राजकुमार हरदयालसिंह संग्रहालय** भी कहा जाता है।

युद्ध संग्रहालय

- 24 अगस्त, 2015 को जैसलमेर में स्थापित।
- राजस्थान का **प्रथम युद्ध संग्रहालय**
- इस संग्रहालय में **1965 ई. में पाकिस्तान** के साथ लड़े गये युद्ध में इस्तेमाल किए गए टैंको विमानों एवं सैन्य वाहनों का संग्रह मिलता है। **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**

मीरा संग्रहालय

- इसमें जैन ग्रंथों, हस्तलिपियों एवं दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है।
- यह उदयपुर में स्थित है ।
- प्रदेश का पहला मीरा संग्रहालय **है।** इस संग्रहालय में मीरा बाई से जुड़ी ऐतिहासिक एवं साहित्यिक साक्ष्य सामग्री संग्रहित की जा रही हैं ।
- एक अन्य मीरा संग्रहालय मेड़ता (नागौर) में भी है।

सरस्वती भण्डार

- यह उदयपुर में स्थित है ।
- इस भण्डार में राजस्थानी भाषा में रासो साहित्य एवं सचित्र पाण्डुलिपियाँ संग्रहित हैं।
- इसकी स्थापना मेवाड़ के **महाराणा सज्जन सिंह** के शासनकाल के दौरान की गई थी।
- **रूपायन संस्थान** सन् 1960 में बोरुंदा (जोधपुर) में स्थापित।

  यह संस्थान पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए प्रयासरत है ।विजयदान देथा एवं कोमल कोठारी का संबंध इसी संस्थान से है।

संस्थान का नाम	**स्थापना वर्ष**
राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल (जयपुर)	1 जनवरी, 1974
राजस्थान मदरसा बोर्ड (जयपुर)	जनवरी, 2003
राजस्थान संस्कृत अकादमी (जयपुर)	1980
जवाहर कला केन्द्र (जयपुर)	8 अप्रैल , 1993
राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद् (जयपुर)	3 नवम्बर, 1997
राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल (जयपुर)	**21 मार्च, 2005**
बालिका शिक्षा फाउण्डेशन (जयपुर)	30 मार्च, 1995
जयपुर कत्थक केंद्र (जयपुर)	**1978-79**
राजस्थान ललित कला अकादमी (जयपुर)	24 नवम्बर, 1957
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (जयपुर)	**15 जुलाई, 1969**
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी (जयपुर)	19 जनवरी, 1986
राजस्थान संगीत संस्थान (जयपुर)	1950
गुरु नानक संस्थान (जयपुर)	1969
राजस्थान उर्दू अकादमी (जयपुर)	1979
राजस्थान सिंधी अकादमी (जयपुर)	1979
रामचरण प्राच्य विद्यापीठ एवं संग्रहालय (जयपुर)	1960
राजस्थानी पंजाबी भाषा अकादमी (जयपुर)	2006
राज्य सहकारी संघ (जयपुर)	1957
पंडित झाबरमल्ल शोध संस्थान जयपुर	2000
राजस्थान संगीत नाटक अकादमी (जोधपुर)	1957
प्राविधिक शिक्षा निदेशालय (जोधपुर)	17 अगस्त, 1956
पश्चिमी क्षेत्र का सांस्कृतिक केंद्र (उदयपुर)	1986
भारतीय लोक कला मण्डल (उदयपुर)	1952

राजस्थान के प्रमुख शोध संस्थान –

संस्थान का नाम	**मुख्यालय**
राजकीय संग्रहालय	झालावाड़

अध्याय – 4

प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां

गुर्जर प्रतिहार वंश :-

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया ।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से 11वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।
- जोधपुर के **बॉक शिलालेख** के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली **महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली** प्रचलित थी ।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में **गुर्जर-प्रतिहार** के नाम से जाना गया ।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार **गुर्जर प्रतिहार** कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी **"भीनमाल (जालौर)"** थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के **सर्वप्रथम** उल्लेख से मिलती है ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे ।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में **कु-ची-लो (गुर्जर)** देश का उल्लेख करता है ।
- जिसकी राजधानी **पि-लो-मो-लो** (भीनमाल) में थी । अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को **'जुर्ज'** भी कहा है ।
- **अल मसूदी प्रतिहारों** को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को **'बोरा'** कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्रजी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को **ईरानी मूल** के बताते हैं ।
- **मिस्टर जैक्सन** ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था । **कनिघंम** ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था ।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। **मुहणोंत नैणसी** (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल ।
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।
- राजस्थान और उत्तर भारत का एक शक्तिशाली राजवंश था, जो अरब आक्रमणकारियों से भारत की रक्षा के लिए 'द्वारपाल' कहलाया, ग्वालियर शिलालेख के अनुसार, वे लक्ष्मण के वंशज माने जाते हैं, जबकि 'गुर्जर' एक क्षेत्र या जनजाति थी.
- नागभट्ट प्रथम (लगभग 8वीं सदी) ने अरबों के आक्रमणों को रोककर वंश की नींव रखी|

भीनमाल शाखा (जालौर)

- **गुर्जर प्रतिहार वंश** – प्रतिहार शब्द वास्तव में पदनाम है जिसका अर्थ द्वारपाल है। अभिलेखिक रूप से गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में हुआ है।
- उत्तर-पश्चिम भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन छठी से बारहवीं शताब्दी तक रहा।
- इतिहासकार रमेशचन्द्र मजूमदार ने गुर्जर प्रतिहार को छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम करने वाला बताया है।
- गुर्जरात्रा (गुर्जर प्रदेश) के स्वामी होने के कारण प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है।
- नीलगुण्ड, राधनपुर, देवली तथा करहाड़ के अभिलेखों में इन्हें गुर्जर कहा गया।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट को रामका प्रतिहार तथा विशुद्ध क्षत्रिय कहा गया है।
- अरब यात्रियों ने इनके लिए 'जुर्ज' शब्द का प्रयोग किया है। अलमसूदी ने गुर्जर प्रतिहारों को 'अल गुजर' तथा राजा को 'बोरा' कहा है।
- राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'विद्धशालभंजिका' में प्रतिहार महेन्द्रपाल को रघुकुल तिलक (सूर्यवंशी) लिखा है।
- मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने ग्रंथ 'सियूकी' में गुर्जर राज्य को 'कु-चे-लों' (गुर्जर) तथा इसकी राजधानी 'पीलोमोलों' (भीनमाल) बताया है।
- कवि पम्प ने अपने ग्रंथ पम्पभारत' में कन्नौज शासक महीपाल को गुर्जर राजा बताया है।
- कैनेडी ने प्रतिहारों को ईरानी मूल का बताया है।
- उद्योतन सूरी ने अपने ग्रंथ 'कुवलयमाला' में गुर्जर शब्द का प्रयोग एक जाति विशेष के रूप में किया है।

रावल सिंह मेवाड़ का उत्तराधिकारी बना जबकि **कुंभकर्ण** ने नेपाल में गुहिल सत्ता की स्थापना की।

- समरसिंह के शासन काल में उसके पुत्र कुंभकर्ण ने नेपाल में गुहिल वंश की स्थापना की तथा दूसरे पुत्र रतनसिंह ने चित्तौड़ पर शासन किया।

रतन सिंह (1302-1303)

- रावल समरसिंह के पश्चात् रावल रतनसिंह ने मेवाड़ का शासक बना
- इसका शासनकाल 1302 ई.- 1303 ई. तक का था।
- रावल रतन सिंह रावल शाखा का अंतिम शासक था।
- इनका दरबारी विद्वान राघव चेतन था।

रानी पद्मिनी –

- रानी पद्मिनी सिंहल द्वीप (श्रीलंका) के राजा गंधर्वसेन व रानी चंपावती की पुत्री थी।
- पद्मिनी की सुन्दरता का बखान हीरामन जाति का तोता करता था।
- रानी पद्मिनी रतनसिंह का गधर्व विवाह हुआ।
- पद्मिनी व रतनसिंह के विवाह के पश्चात् गौरा (रानी पद्मिनी के चाचा) – बादल (रानी पद्मिनी के भाई) व 1600 महिलाऐं पद्मिनी के साथ मेवाड़ आई।
- राघव चेतन एक जाना – माना तांत्रिक था जिसका पता चलने पर रतनसिंह ने राघव चेतन को मेवाड़ छोड़ने का आदेश दिया।
- तत्पश्चात् राघव चेतन अल्लाउद्दीन खिलजी की शरण में गया।
- अलाउद्दीन को पद्मिनी की जानकारी राघव चेतन ने दी । (पद्मावत ग्रन्थ के अनुसार)

अल्लाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के कारण –

- अल्लाउद्दीन खिलजी की साम्राज्यवादी व महत्वकांक्षी निति।
- चित्तौड़ का मालवा तथा गुजरात के बिच में पड़ना (यह आक्रमण करने का सबसे प्रभावी कारण था)
- रानी पद्मिनी की प्रबल आकांक्षा (मलिक मोहम्मद जायसी के ग्रन्थ पद्मावत के अनुसार)
- डॉ. दशरत शर्मा के अनुसार चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण का मुख्य कारण दुर्ग का सामरिक महत्व था।
- अल्लाउद्दीन खिलजी की सेना आक्रमण हेतु 28 जनवरी 1303 को रवाना हुई जबकि अल्लाउद्दीन खिलजी को 26 अगस्त, 1303 को चित्तौड़ पर विजय प्राप्त हुई।
- अल्लाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय रावल रतनिसंह के सेनापति गौरा-बादल (चाचा-भतिजा) थे
- गौरा-बादल ने केसरिया किया और अपने शौर्य का परिचय देते हुए रतनसिंह और गौरा व बादल लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- इधर चित्तौड़ गढ़ दुर्ग में अल्लाउद्दीन खिलजी से अपने बचाव के लिए रानी पद्मिनी ने 1600 महिलाओं के साथ 26 अगस्त 1303 को जौहर किया।

चित्तौड़गढ़ का प्रथम शाका – 1303 ई.

केशरिया – रावल रतनसिंह के नेतृत्व में हुआ ।

जोहर – रानी पद्मिनी के नेतृत्व में हुआ ।

- अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ गढ़ का नाम खिज्राबाद रख कर इसे अपने पुत्र खिज्र खा को सौंप दिया। खिजरा खा ने चित्तौड़ पर 1303 ई. -1313 ई. तक शासन किया।
- ग्रन्थ पद्मावत में इस युद्ध में रतनिसंह को हृदय, पद्मिनी की बुद्धि व अलाउद्दीन को माया की संज्ञा दी गई है।
- चित्तौड़ विजय के पश्चात् अल्लुद्दीन खिलजी ने गंभीरी नदी पर बांध बनवाया।
- चित्तौड़गढ़ में था बाई पीर की दरगाह पर शिलालेख लिखवाया।
- सिसोदा ठिकाने के सामंत लक्ष्मण ने सिंह चित्तौड़ किले रक्षा में अपने 7 पुत्रो सहित अपना बलिदान दिया।
- **Note – 1303 के आक्रमण के बाद।**
- लेकिन गौरीशंकर हीराचंद ओझा इस घटना को काल्पनिक बताते हैं और आक्रमण (यह आक्रमण 1303 वाला नहीं हैं) का कारण अल्लाउद्दीन खिलजी का गुजरात तक अधिकार करने की लालसा बताते हैं जबकि गोपीनाथ शर्मा इस आक्रमण को काल्पनिक नहीं वास्तविक मानते हैं
- पद्मावत ग्रन्थ – 1540 ई. में शेरशाह सूरी के शासनकाल में अवधी भाषा में पद्मावत ग्रन्थ की रचना मालिक मुहम्मद जायसी द्वारा की गई।
- खजाइन उल फतुह या तारीख ए अलाइ – इसका रचनाकार आमिर खुशरो था जो अल्लाउद्दीन के सैनिक अभियान में साथ था। इस ग्रन्थ में आमिर खुशरो ने अल्लाउद्दीन खिलजी की चित्तौड़ विजय का सजीव वर्णन किया
- तारीख ए फरिश्ता – इसका लेखक फरिश्ता पद्मिनी को रावल रतन सिंह की पुत्री बताता हैं।
- 1313 ई. 1320 ई. तक चित्तौड़ शासक मालदेव (जालौर शासक कान्हड़देव का भाई) रहा।
- मालदेव ने सिसोदा सामन्त हम्मीर के साथ अपनी पुत्री का विवाह किया।
- 1320 ई.-1326 ई. तक चितौड़गढ़ पर जैसासिंह का अधिकार रहा।
- राणा हम्मीर ने जैसासिंह को पराजित कर चित्तौड़गढ़ पर अधिकार किया।

हम्मीर सिंह (1326-64)

- गुहिल वंश की मुख्य शाखा (रावल शाखा) के पतन के सोनगरा चौहानों को पराजित कर हम्मीर सिंह ने **1326 ई.** में मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश की नींव रखी। इससे पहले 1303 ई. में रावल रतन सिंह को पराजित कर अलाउद्दीन खिलजी ने राजधानी चित्तौड़गढ़ (मेवाड़) पर अधिकार कर लिया था। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने पुत्र खिज्र खाँ को चित्तौड़गढ़ में नियुक्त किया तथा चित्तौड़गढ़ का नाम बदलकर 'खिज्राबाद' कर दिया। 1311 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। जालौर के शासक कान्हड़ देव सोनगरा चौहान व उसके पुत्र वीरमदेव

युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए । लेकिन कान्हड़ देव के भाई मालदेव सोनगरा चौहान ने अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता स्वीकार कर ली थी जिस कारण उसे जीवित छोड़ दिया गया। अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के मालदेव को चित्तौड़ का प्रशासक नियुक्त कर खिज्र खाँ दिल्ली लौट आया । धीरे-धीरे मेवाड़ में मालदेव ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली।

- सिसोदिया वंश के राणा हम्मीर सिंह अरिसिंह के पुत्र तथा लक्ष्मण सिंह के पौते थे। उन्हें मेवाड़ के उद्धारक के रूप में जाना जाता है। दिल्ली सल्तनत उन दिनों अस्थिरता के दौर से गुजर रही थी, खिलजी साम्राज्य का पूरी तरह से पतन हो चुका था और अब दिल्ली पर मुहम्मद बिन तुगलक का शासन स्थापित हो चुका था। इसी अस्थिरता का लाभ उठाते हुए राणा हम्मीर सिंह ने 1326 ई. में मालदेव चौहान के पुत्र जैसा/जय सिंह/बनवीर चौहान को पराजित कर मेवाड़ से मुस्लिम सत्ता को उखाड़ फेंका ।
- हम्मीर सिंह ने अपनी सत्ता का केंद्र केलवाड़ा नामक स्थान को बनाया। मुहम्मद बिन तुगलक तथा हम्मीर सिंह के मध्य बाँसवाड़ा में **सिंगोली (वर्तमान - मांडलगढ़)** नामक स्थान पर युद्ध हुआ । इस युद्ध को सिंगोली का युद्ध (1336 ई.) भी कहा जाता है। हालाँकि इस युद्ध की तिथि के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं है।
- राणा हम्मीर सिंह को सिसोदिया वंश का प्रथम शासक भी कहा जाता है । यहाँ एक बात स्पष्ट है, सिसोदिया कोई वंश नहीं है, बल्कि यह एक शाखा है, जैसे रावल एक शाखा है । जबकि ये दोनों शाखाएं गुहिल वंश की है । राजा रण सिंह के पुत्र राहप ने सिसोदा गांव बसाया तथा अपनी शासन व्यवस्था यहीं से शुरू की। आगे चलकर इसी शाखा में हम्मीर सिंह का जन्म हुआ। सिसोदा गांव के होने के कारण ये सिसोदिया शाखा के कहलाने लगे। हालांकि सामान्यतः सिसोदिया शाखा को सिसोदिया वंश के नाम से जाना जाता है।
- हम्मीर सिंह एक बहुत ही वीर और प्रतापी शासक थे । राणा कुम्भा की कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति में हम्मीर सिंह को **विषम घाटी पंचानन** (विकट परिस्थितियों में सिंह के समान) कहा गया है जबकि इन्हीं की ही रचना **रसिक प्रिया** की टीका में उन्हें वीर राजा की संज्ञा भी दी गई है। हम्मीर सिंह ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग में **बरवड़ी माता** का भव्य मंदिर बनवाया जिसे आज अन्नपूर्णा माता मंदिर के नाम से जाना जाता है।
- राणा हम्मीर सिंह ने 1326 ई. से 1364 ई. तक शासन किया। 1364 ई. में हम्मीर सिंह की मृत्यु के उसका पुत्र खेता (क्षेत्र सिंह) अगला शासक बना।
- हम्मीर, बनवीर सोनगरा को हराकर चित्तौड़ पर अपना पुनः अधिकार कर लिया , हम्मीर सिसोदा (राजसमंद) गाँव का था इसलिए यहाँ से गुहिल वंश की सिसोदियाँ शाखा के शासन का प्रारंभ हुआ।
- हम्मीर ने राणा उपाधि का प्रयोग किया। [रावल उपाधि का प्रयोग करने वाला अन्तिम राजा रतन सिंह था।] चूंकि हम्मीर ने चित्तौड़ पर पुनः गुहिल वंश का शासन स्थापित किया इसलिए हम्मीर को यह उपाधि मिली हम्मीर को "मेवाड़ का उद्धारक" कहा जाता है।
- राणा कुम्भा की रसिक प्रिया नामक पुस्तक में हम्मीर को "वीर राजा" बताया गया है।
- बरवड़ी माता मेवाड़ के गुहिल वंश की ईष्ट देवी है और "बाण माता" मेवाड़ के गुहिल वंश की कुल देवी है। सिसोदा गाँव की स्थापना "राहप" ने की थी।

महाराणा क्षेत्रसिंह 1364 – 1382 ई.:-

महाराणा हम्मीर का उत्तराधिकारी उनका **जेष्ठ पुत्र क्षेत्र सिंह** बना। इसने अजमेर, मांडल, जहाजपुर, एवं छप्पन के प्रदेशों को विजित किया तथा मालवा के सुल्तान दिलावर खाँ गौरी (मालवा के अमीनशाह के नाम से प्रसिद्ध) परास्त किया। क्षेत्रसिंह ने बूँदी के हाड़ाओं को पराजित कर बूँदी को अपने अधीन किया । तथा ईडर पर आक्रमण कर वहाँ के शासक रणमल को कैद कर लिया।

1382 ई. में क्षेत्रसिंह की मृत्यु हो गई। इसके 7 पुत्र एवं कई औरस पुत्र (जिनमें चाचा व मेरा भी थे हुए।

राणा लाखा (लक्ष सिंह) (1382-1421)

- राणा लाखा के पिता का नाम **राणा क्षेत्र सिंह** था।
- जब राणा लाखा गद्दी पर बैठे, तब मेवाड़ आर्थिक समस्याओं से ग्रसित था, लेकिन लाखा के शासनकाल में ही जावर नामक स्थान पर **चाँदी की खान** निकल आती है जो की एशिया की सबसे बडी चाँदी की खान है, जिससे लाखा की समस्त आर्थिक समस्याएँ हल हो जाती हैं, इसी घटना से राणा लाखा का शासनकाल उन्नति की ओर बढ़ जाता है।
- इनके शासनकाल में **उदयपुर शहर** के बीचों बीच पीछू नामक एक बंजारे ने **पिछोला झील** का निर्माण कराया, यह झील लाखा के शासनकाल में मेवाड़ के लिए पेयजल का एकमात्र साधन रही। राणा लाखा के जीवन का सबसे बड़ा रोचक तथ्य यह था कि इन्होंने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में मारवाड़ के राजा राव की राजकुमारी **हंसाबाई** से विवाह किया, लेकिन यह विवाह इस शर्त पर हुआ कि लाखा का ज्येष्ठ पुत्र कुंवर चूँड़ा मेवाड़ राज्य का उत्तराधिकारी नहीं बनेगा, बल्कि लाखा व रानी हंसाबाई से उत्पन्न पुत्र ही मेवाड़ का उत्तराधिकारी होगा, जो कि आगे चलकर महाराणा मोकल हुए । राणा लाखा एक विद्वान शासक होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ भी थे, इनके दरबार में भी दो प्रसिद्ध संगीतज्ञ मेवाड़ दरबार की शोभा बढ़ाते थे जिन्हें **धनेश्वर भट्ट व झोटिंग भट्ट** के नाम से जाने जाते थे।
- उन्होंने चित्तौड़गढ़ किले में स्थित **एकलिंग जी मंदिर** का परकोटा बनवाया और कई अन्य मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया
- "कुम्भा हाड़ा" बूँदी की रक्षा करते हुए मारा गया था।
- राणा लाखा के बड़े बेटे का नाम चूँड़ा था। वहीं दूसरी तरफ उस समय मारवाड़ के राजा का नाम भी चूँड़ा था जिसकी पुत्री राजकुमारी" हंसाबाई" की शादी राणा लाखा से कर दी गयी। इस समय लाखा के बेटे चूँड़ा ने यह प्रतिज्ञा ली कि वह मेवाड़ का अगला राजा नहीं बनेगा बल्कि हंसाबाई का बड़ा बेटा ही मेवाड़ का अगला राजा बनेगा। और यही कारण

- यह प्रशस्ति जगतसिंह प्रथम तथा राजसिंह के काल की उपलब्धियां जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं, यह विश्व की सबसे बड़ी पाषाण उत्कीर्ण प्रशस्ति है।

- **चौहान वंश का इतिहास**

अजमेर के चौहान

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं। वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। जैन विद्वान राजशेखर सूरी के 'प्रबन्धकोश' के अनुसार, वासुदेव चौहान ने **551 ई.** (विक्रम संवत 608) के आसपास शाकंभरी (सांभर) में चौहान राज्य की नींव रखी थी।

उन्होंने सांभर में अपनी कुलदेवी **शाकंभरी माता** के मंदिर का निर्माण करवाया था।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडोंच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरू (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया।

अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग (गढ़-बिटली) कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

सोमलदेवी (या सोमलेखा): यह अजयराज (लगभग 1113 ई.) की रानी थीं। वह भारत की उन गिनी-चुनी रानियों में से एक थीं जिन्होंने अपने नाम के सिक्के (चांदी के अजयप्रिय द्रम्म) जारी किए थे।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 तक रहा।

1. अर्णोराज ने अजमेर पर आक्रमण करने वाली गजनवी सेना (सुल्तान बहराम शाह) को बुरी तरह पराजित किया। इस विजय की स्मृति में उन्होंने अजमेर में **आनासागर झील (1137 ई)** का निर्माण करवाया ताकि युद्ध भूमि को तुर्कों के रक्त से शुद्ध किया जा सके।।
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया।**
3. गुजरात के चालुक्य राजा **सिद्धराज जयसिंह** ने अर्णोराज पर आक्रमण किया, लेकिन बाद में दोनों के बीच संधि हो गई और अर्णोराज ने सिद्धराज की पुत्री **कांचन देवी** से विवाह किया। हालांकि, बाद में चालुक्य शासक **कुमारपाल** से वे आबू के युद्ध में पराजित हुए थे। **माता-पिता:** वे अजयराज द्वितीय और सोमलदेवी के पुत्र थे।

   रानियाँ: उनकी दो प्रमुख रानियाँ थीं:**कांचन देवी:** गुजरात के चालुक्य वंश की राजकुमारी (पुत्र: सोमेश्वर)।**सुधवा (या सिद्धवा):** मारवाड़ की राजकुमारी (पुत्र: जगद्देव और विग्रहराज चतुर्थ)।
4. उनके दरबार में **देवघोष** और **धर्मघोष** जैसे प्रसिद्ध जैन विद्वान रहते थे।
5. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. उन्होंने दिल्ली के तोमर शासकों (गंगपालदेव) को अपने अधीन किया और दिल्ली पर नियंत्रण स्थापित किया। दिल्ली-शिवालिक स्तंभ शिलालेख में उन्हें "म्लेच्छों (विदेशी आक्रमणकारियों) का नाश करने वाला" बताया गया है।
6. बिजोलिया शिलालेख के अनुसार, उन्होंने जालोर, पाली और नाडोल के क्षेत्रों पर भी विजय प्राप्त की।
7. उन्होंने गजनवी शासकों बहराम शाह और खुसरो मलिक के आक्रमणों का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया और उन्हें पराजित किया।
8. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**
9. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
10. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय (सरस्वतीकण्ठाभरण" विद्यापीठ) का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुडवाकर अढ़ाई दिन का झोपडाऽ बनवाया।**
11. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि "**वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था**"।

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।

- **राठौड़ वंश एवं मारवाड़ वंश**

इस अध्याय में हम राठौड़ वंश का अध्ययन करेंगे पहले हम राठौड़ वंश कि सभी शाखाओं का संक्षिप्त अध्ययन करेंगे। उसके पश्चात् मारवाड़ के राठौड़ वंश का अध्ययन करेंगे।

राठौड़ वंश की शाखाएँ –

धांधल, भडेल, धूहड़िया, हटडिया, मालावत, गोगादेव, महेचा, राठौड़, बीका, मेडतिया, बीदावत, बाल चांपावत, कांधलोत, उदावत, देवराजोत, गहड़वाल, करमसोत, कुम्पावत, मंडलावत, जरावत आदि ।

राठौड़ों का प्राचीन इतिवृत :-

राम के पुत्र कुश के कुल में सुमित्र अयोध्या का अंतिम राजा था। नंदवंश के महापद्मनंद ने अयोध्या राज्य को मगध साम्राज्य में मिला लिया। सुमित्र के बाद यशोविग्रह तक के मुख्य व्यक्तियों के नाम ही बड़ुवों (बहीभट्टों) की बहियों से तथा अन्य साहित्यिक स्त्रोतों से प्राप्त होते हैं। अतः इन साधनों के आधार पर सुमित्र से आगे की वंश परम्परा दी जा रही है। सुमित्र के दो वंशजों में कूर्म के वंशज रोहितास (बिहार), निषिध, ग्वालियर और नरवर होते हुए राजस्थान में आये जो कछवाह कहलाते हैं। दूसरे वंशज विश्वराज के वंशधर क्रमशः मूलराय व राष्ट्रवर के नाम से इनके वंशज राष्ट्रवर (राठौड़) कहलाये। बाद के संस्कृत साहित्य में कहीं कहीं राष्ट्रवर (राठौड़ों) का संस्कृतनिष्ठ शब्द 'राष्ट्रकूट' या 'राष्ट्रकूटियों' भी लिखा है।

सूरज प्रकाश के लेखक करणीदान व टॉड के अनुसार तेरह खाँपों की उत्पत्ति इस प्रकार हुई –

1. दानेश्वरा :-

धर्मविम्ब एक दानी व्यक्ति हुआ। अतः इनके वंशज **दानेश्वरा** कहलाये। (Annals and antiqueties of raj-अनुसार केवल कुमार ठाकुर) इनको **कमधज** भी कहा जाता था।

2. अभैपुरा :-

पुंज के दूसरे पुत्र भानुदीप कांगड़ा (हि. प्र.) के पास था। देवी ज्वालामुखी ने उसे अकाल के भय से रहित कर दिया अर्थात् अभय बना दिया। इस कारण उसके वंशज अभैपुरा कहलाये।

3. कपालिया :-

पुंज के तीसरे पुत्र वीरचंद थे। इसने शिव को कपाल चढ़ा दिया था। इस कारण इनके वंशज कपालिया कहलाये।

4. कुरहा :-

पुंज के पुत्र अमरविजय ने परमारों से कुरहगढ़ जीता। संभवतः कुरह स्थान के नाम से **कुरहा** कहलाए।

5. जलखेड़ा :-

पुंज के पुत्र सजनविनोद ने तंवरों को परास्त किया और जलंधर की सहायता से जल प्रवाह में बहा दिया। अतः इसके वंशज जलखेड़ा कहलाये।

6. बुगलाणा :-

पुंज के पुत्र पदम बुगलाणा स्थान के नाम से बुगलाणा कहलाये।

7. अहर :-

पुंज के पुत्र अहर के वंशज 'अहर' कहलाये। बंगाल की तरफ चले गए।

8. पारकरा :-

पुंज के पुत्र वासुदेव ने कन्नौज के पास कोई पारकरा नामक नगर बसाया अतः उसके वंशज '**पारकर**' कहलाये।

9. चंदेल :-

दक्षिण में पुंज के पुत्र उग्रप्रभ ने चंदी व चंदावर नगर बसाये अतः चंदी स्थान के नाम से चंदेल कहलाये। (चंदेल-चंद्रवंशी इनसे भिन्न हैं।)

10. वीर :-

सुबुद्धि या मुक्तामान बड़ा वीर हुआ। इसे वीर की उपाधि दी। इस कारण इनके वंशज वीर राठौड़ कहलाये।

11. दरियावरा :-

भरत ने बरियावर स्थान पर राज्य किया। स्थान के नाम से ये 'बरियावर' कहलाये।

12. खरोदिया :-

कृपासिंधु (अनलकुल) खरोदा स्थान के नाम से खरोदिया राठौड़ कहलाये।

13. जयवंशी :-

चंद्र व इसके वंशज जय पाने के कारण जयवंशी कहलाये।

- **मारवाड़ का इतिहास**

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर - पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था। प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तर प्रदेश) चले गये। फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'सिवाना दुर्ग'(बालोतरा) को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
3. किशनगढ़	1609 ई.	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं ।

- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना हैं । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है ।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना हैं ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं। मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी, राजपाल जी, जालन सिंह जी, राव छाड़ा जी, राव तीड़ा जी, खीम करण जी, राव वीरम दे, राव चूँड़ा जी, राव रिड़मल जी, राव जोधा, राव बीका, बीदा, दूदा, कानध्ल, मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए । राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर ।

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की । अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ हैं साथ ।
बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया ।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया । वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादशी सोमवार को करीब 80 वर्ष की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।

- सीहा जी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री) से बड़े पुत्र आसनाथ जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़ के शासक बने । राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले पहले व्यक्ति थे ।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

राव चूँड़ा (1383 – 1423)

- राव चूँड़ा विरमदेव का पुत्र था ।
- राव चूँड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है । अपने पिता की मृत्यु के समय चूँड़ा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।
- चूँड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँड़ा मारा गया ।
- राव चूँड़ा ने डीडवाना-कुचामन में चूण्डासर कस्बा बसाया।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था ।

रावल मल्लिनाथ

- राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा, बालोतरा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।
- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

कान्हा (1423 – 1427)

चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

अध्याय - 6

आधुनिक राजस्थान

राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां				
क्र. सं.	**संधिकर्त्ता राज्य**	**संधि के समय शासक**	**संधि की तिथि**	**अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि**
1.	करौली	हरबक्षपालसिंह	9 नवम्बर, 1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15 नवम्बर, 1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिंह	26 दिसम्बर, 1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिंह	6 जनवरी, 1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिंह	22 जनवरी, 1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बूँदी	विसनसिंह	10 फरवरी, 1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिंह	21 मार्च, 1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिंह	7 अप्रैल , 1818	खिराज से मुक्त
9.	जयपुर	जगतसिंह	15 अप्रैल , 1818	संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित।
10.	जैसलमेर	मूलराज	2 जनवरी, 1819	मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त।
11.	प्रतापगढ़	सामन्तसिंह	5 अक्टूबर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।

राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां

क्र. सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
12.	डूंगरपुर	जसवन्त सिंह द्वितीय	1818 ई.	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
13.	बाँसवाड़ा	उम्मेदसिंह	25 दिसम्बर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
14.	सिरोही	शिवसिंह	11 सितम्बर, 1823	संधि के तीन वर्ष तक खिराज से मुक्त उसके बाद आय के प्रति रुपये पर छः आना।
15.	झालावाड़	मदनसिंह	10 अप्रैल, 1838	80,000 रु. वार्षिक।

प्रश्न- राजपूताना की निम्नलिखित रियासतों ने 1817-1818 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ संधि पर हस्ताक्षर किये -(RAS Pre 2013)
(1) कोटा (2) जोधपुर
(3) करौली (4) उदयपुर
निम्नलिखित में से कौन-सा अनुक्रम, कालाक्रमानुसार सही है ?
(a) (1), (2), (3), (4)
(b) (3), (4), (1), (2)
(c) (4), (1), (2), (3)
(d) (3), (1), (2), (4) (d)

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही राजपूत राज्यों पर मुग़ल केन्द्रीय सत्ता का नियंत्रण ढीला पड़ गया।
- सभी राजपूत राज्य अपने राज्य का विस्तार करने तथा पड़ोसी राज्य पर राजनैतिक वर्चस्व स्थापित कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयत्न में लग गए।
- इस प्रकार के प्रयत्नों के फलस्वरूप राजपूत राज्यों में पारस्परिक संघर्ष बढ़ गये।
- शासकों ने पारस्परिक संघर्षों में सहायता प्राप्त करने के लिए बाहरी ताकतों (मराठा, अंग्रेज, होल्कर आदि) का सहारा लेने लगे।
- जब राज्यों में उत्तराधिकार संघर्ष में मराठों का हस्तक्षेप हुआ तो राजपूताना के शासकों ने मराठा के विरुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायता माँगी लेकिन अंग्रेजों ने इन प्रस्तावों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उस समय अंग्रेजों की नीति राजपूताना के लिए मराठों से युद्ध करने की नहीं थी।
- भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन 1600 ई. में हुआ था।
- 1757 ई. में प्लासी युद्ध के पश्चात् ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहली बार भारत में बंगाल में) राजनीतिक सत्ता प्राप्त की।
- रॉबर्ट क्लाइव सन् 1757 में बंगाल का प्रथम गवर्नर बना।
- 1764 ई. के बक्सर युद्ध के पश्चात् हुई इलाहाबाद संधि ने कम्पनी को भारत में पूर्णतः राजनीतिक शक्ति प्रदान की।
- वारेन हेस्टिंग्स 1772 ई. में बंगाल के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
- वारेन हेस्टिंग्स ने सुरक्षा घेरे की नीति (पॉलिसी ऑफ रिंग फेंस) को अपनाया जिसके अनुसार कम्पनी द्वारा अपने अधिकृत प्रदेशों को शत्रुओं से सुरक्षा के लिए पड़ौसी राज्यों के साथ मैत्री संधि कर उन्हें बफर राज्यों के रूप में प्रयुक्त किया जाता था।
- लॉर्ड कार्नवालिस ने भारतीय शासकों के मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई ।
- 1798 ई. में लॉर्ड वेलेजली ने देशी राज्यों के साथ सहायक संधि की नीति अपनाई।
- इस नीति के तहत देशी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा व विदेशी नीति का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर था जिसका खर्च संबंधित राज्य को उठाना पड़ता था।

- कम्पनी इस हेतु उस राज्य में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट की नियुक्ति करती थी एवं सुरक्षा हेतु उस देशी राज्य के खर्च पर अपनी सेना रखती थी।
- भारत में प्रथम सहायक संधि 1798 ई. में हैदराबाद के निजाम के साथ की गई।
- अगस्त 1803 ई. में आंग्ल-मराठा के द्वितीय युद्ध में मराठों की पराजय के पश्चात् मराठा पेशवा दौलतराव द्वारा 30 दिसम्बर, 1803 को अंग्रेजों के साथ सुर्जीअर्जन गाँव संधि कर जयपुर एवं जोधपुर राज्यों को अंग्रेजों को सौंप दिया।
- राजस्थान में सर्वप्रथम भरतपुर राज्य के महाराजा रणजीतसिंह के साथ 29 सितम्बर 1803 को लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि की।
- आपसी अविश्वास के कारण यह संधि क्रियान्वित न हो पायी। इससे रुष्ट होकर लॉर्ड लेक के नेतृत्व में अंग्रेजों ने 5 बार भयंकर आक्रमण किये लेकिन अंग्रेज भरतपुर को जीतने में असफल रहे एवं अप्रैल 1805 में नई संधि हुई जिसमें भरतपुर की पूर्व की स्थिति रखी गई, भरतपुर राज्य की सीमा एवं क्षेत्रफल में कोई परिवर्तन नहीं किया गया तथा भरतपुर को डीग (वर्तमान डीग जिला) क्षेत्र लौटा दिया गया।
- अलवर प्रथम राज्य था जिसने ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ विस्तृत रक्षात्मक एवं आक्रामक संधि की थी।
- अंग्रेजों द्वारा जयपुर के महाराजा जगतसिंह द्वितीय के साथ 12 दिसम्बर, 1803 को संधि की गई।
- 1805 ई. में यह संधि भंग कर दी गई लेकिन मराठा सरदार एवं पिंडारियों के आतंक ने जयपुर-अंग्रेजों को पुनः संधि करने के लिए बाध्य कर दिया।
- 2 अप्रैल, 1818 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं जयपुर राज्य के मध्य पुनः संधि हुई।
- जोधपुर शासक भीमसिंह के समय जोधपुर राज्य के साथ 22 दिसम्बर, 1803 को संधि की गई। इस संधि की प्रमुख शर्तें एक-दूसरे को सहायता देने, परस्पर मित्रता बनाए रखने की थी।
- खिराज नहीं देने एवं जोधपुर राज्य में किसी फ्रांसीसी को नौकरी नहीं देने अथवा देने से पूर्व कम्पनी से सलाह मशविरा करना आदि थी।
- 1813 ई. में लॉर्ड हेस्टिंग्स के गवर्नर जनरल बनने के बाद कम्पनी सरकार की नीति में परिवर्तन आया।
- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने घेरे की नीति के स्थान पर अधीनस्थ पार्थक्य की नीति को क्रियान्वित किया।

1817-18 की अधीनस्थ संधि

- 1818 ई. में राजपूत राज्यों के साथ संधियाँ करने के लिए लॉर्ड हेस्टिंग्स ने दिल्ली रेजीडेन्ट चार्ल्स मेटकॉफ को कार्य सौंपा। मेटकॉफ ने राज्य के प्रतिनिधियों से बातचीत कर संधि पत्र तैयार किये।
- सन् 1811 में चार्ल्स मेटकॉफ ने राजस्थान के राजपूत शासकों का एक परिसंघ बनाने का सुझाव दिया जो ब्रिटिश संरक्षण में कार्य करे।
- राजस्थान में अधीनस्थ पार्थक्य की नीति (1818 की संधि) को स्वीकार करने वाली पहली रियासत - करौली।
- (9 नवम्बर 1817) अधीनस्थ पार्थक्य संधि स्वीकार करने के समय करौली का शासक- हरबक्षपाल सिंह थे।
- अधीनस्थ पार्थक्य की संधि को स्वीकार करने वाला अंतिम राज्य- सिरोही (11 सितम्बर 1823) यहाँ के शासक महाराजा शिव सिंह थे।

प्रश्न- निम्नलिखित में से किसने राजपूताना की देशी रियासतों के साथ 1817-18 की अधीनस्थ संधि की बातचीत की थी ? (RAS. 2016)
(A) डेविड ऑक्टरलोनी
(B) चार्ल्स मैटकॉफ
(C) आर्थर वेलेजली
(D) जॉन जॉर्ज **(2)**

अधीनस्थ पार्थक्य संधि (1818) की शर्तें

1. अंग्रेजी कम्पनी एवं संधिकर्त्ता राज्य के साथ सदैव मित्रता के समन्ध बने रहेंगे। एक के मित्र तथा शत्रु दोनों के मित्र और शत्रु समझे जाएँगे।
2. संधिकर्त्ता राज्य की रक्षा करने का दायित्व कम्पनी का होगा।
3. संधिकर्त्ता राज्य कम्पनी का आधिपत्य स्वीकार करेगा और कम्पनी सरकार के अधीन रहते हुए सदैव सहयोग प्रदान करेंगे।
4. ये राज्य अन्य किसी राज्य के साथ राजनीतिक सम्बन्ध नहीं रखेंगे और न ही किसी के साथ संधि व युद्ध करेंगे। यदि किसी पड़ोसी राज्य के साथ झगड़ा हो जाएगा, तो वे उसमें कम्पनी की मध्यस्थता स्वीकार करेंगे।
5. संधिकर्ता राज्यों के शासक व उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के स्वतंत्र शासक होंगे।
6. कम्पनी इन राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
7. जो राज्य पहले मराठों को खिराज देते थे, वे ही अब कम्पनी को खिराज देंगे।

कोटा राज्य के साथ संधि

26 दिसम्बर, 1817 को कोटा के मुख्य प्रशासक झाला जालिमसिंह एवं गवर्नर जनरल के विशेष प्रतिनिधि चार्ल्स मेटकॉफ के मध्य 1818 की संधि की गई। इस संधि में 11 धाराएँ थीं।

11 वीं धारा में संधि पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों के नाम हैं।

संधि की शर्तें

1. कम्पनी सरकार व कोटा राज्य के मध्य पारस्परिक मित्रता एवं सद्भावना सदैव बनी रहेगी।
2. एक पक्ष का मित्र एवं शत्रु दूसरे पक्ष का भी मित्र एवं शत्रु होगा।

अध्याय – 8

विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन प्रजामण्डल

- 1927 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना के साथ ही सक्रिय राजनीति का काल आरम्भ हुआ।
- कांग्रेस का समर्थन मिल जाने के बाद इसकी शाखायें स्थापित की जाने लगी।
- 1931 ई. में रामनारायण चौधरी ने अजमेर में देशी राज्य लोक परिषद् का प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन आयोजित किया।
- 1938 ई. में कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों के लोगों द्वारा चलाये जाने वाले स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन दिया ।
- कांग्रेस के इस प्रस्ताव से देशी रियासतों में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक समर्थन मिला । इन राज्यों में चल रहे आंदोलन प्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस से जुड़ गये और राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ। प्रजामण्डल की स्थापना हुई, जिसने देशी शासकों के अधीन उत्तरदायी प्रशासन की मांग की।

- **बीकानेर में प्रजामण्डल**

- बीकानेर के महाराजा गंगासिंह प्रतिक्रियावादी व निरंकुश शासक थे।
- गंगासिंह (1880-1943) प्रथम भरतपुर के बाद शांति समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले एकमात्र भारतीय प्रतिनिधि व 1921 में स्थापित नरेन्द्र मण्डल के संस्थापकों में से एक थे।
- बीकानेर क्षेत्र के प्रारंभिक नेता कन्हैयालाल ढूँढ़ व स्वामी गोपालदास थे, इन्होंने 1907 में चूरू में सर्वहितकारिणी सभा स्थापित की।
- सर्वहितकारिणी सभा ने चूरू में लड़कियों की शिक्षा हेतु 'पुत्री पाठशाला' व अनुसूचित जातियों की शिक्षा के लिए कबीर पाठशाला स्थापित की गई। महाराजा इस रचनात्मक कार्य के प्रति भी आशंकित हो उठे और षड़यंत्र बताकर उन्हें प्रतिबंधित कर दिया।
- 26 जनवरी 1930 को स्वामी गोपालदास व चन्दनमल ब्राह्मण ने सहयोगियों के साथ चूरू के सर्वोच्च शिखर धर्मस्तुप पर तिरंगा फहराया।
- अप्रैल, 1932 ई. में जब लंदन में महाराजा गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने गये तो बीकानेर में एक दिग्दर्शन' नामक पेम्पलेट बांटे गये। जिसमें बीकानेर की वास्तविक दमनकारी नीतियों का खुलासा किया गया। लौटकर महाराजा ने सार्वजनिक सुरक्षा कानून लागू किया।
- स्वामी गोपालदास, चंदनमल बहड़, सत्यनारायण सर्राफ, खूबचन्द सर्राफ आदि को बीकानेर षड़यंत्र केस के नाम पर गिरफ्तार कर लिया गया।
- अक्टूबर, 1936 में मघाराम वैध ने कलकत्ता में बीकानेर प्रजामण्डल की स्थापना की।
- 4 अक्टूबर, 1936 ई. को प्रमुख नेता शीघ्र ही निर्वाचित कर दिये गये, जिनमें वकील मुक्ताप्रसाद, मघाराम वैध व लक्ष्मीदास शामिल थे । रघुवरदयाल ने 22 जुलाई, 1942 ई. को बीकानेर प्रजा ने परिषद् की स्थापना की, जिसका उद्देश्य महाराजा के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था।
- 1943 में गंगासिंह जी की मृत्यु के बाद शार्दुल सिंह गद्दी पर बैठे। वे भी दमन में विश्वास रखते थे।
- द्वारका प्रसाद नामक छठी कक्षा के बालक को संस्था से निकाला गया क्योंकि उसने उपस्थिति गणना के समय जयहिन्द बोल दिया था।
- 26 अक्टूबर, 1944 ई. को बीकानेर दमन विरोधी दिवस मनाया गया जो राज्य में प्रथम सार्वजनिक प्रदर्शन था। इसी बीच भारत में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई और महाराजा ने उत्तरदायी शासन की घोषणा की।
- 30 जून, 1946 ई. में रायसिंह नगर में हो रहे प्रजा परिषद् के सम्मेलन में पुलिस ने गोलीबारी की। बदली हुई परिस्थितियों को देखते हुए सत्ता हस्तान्तरण के लक्षण जब दिखने लगे तो प्रजा परिषद् का कार्यालय पुनः स्थापित किया गया।
- 1946 ई. में ही दो समितियों, संवैधानिक समिति व मताधिकार समिति की स्थापना की गई। रिपोर्ट को लागू करने का आश्वासन तो दिया गया पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं हो पाई व उत्तरदायी शासन की मांग अधूरी ही रही।
- 16 मार्च, 1948 ई. में जसवंत सिंह दाउदसर के नेतृत्व में मंत्रिमण्डल बना जिसे प्रजा परिषद ने अस्वीकृत कर दिया और उसके मंत्रियों ने इस्तीफा दिया।
- 30 मार्च, 1949 ई. को वृहत्तर राज्य के निर्माण के साथ रघुवर दयाल, हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमण्डल में सम्मिलित हुए।

जैसलमेर में प्रजामण्डल

- यह क्षेत्र राजस्थान का सर्वाधिक पिछड़ा क्षेत्र था, जो विस्तारित रेगिस्तान, यातायात संचार के सीमित साधनों व राजनीतिक पृथकता के कारण शेष राजस्थान से कटा ही रहा।
- जैसलमेर प्रजामंडल की स्थापना 15 दिसंबर, 1945 को मीठालाल व्यास द्वारा जोधपुर में की गई थी।
- यहाँ के महारावल का दमन अत्यन्त तीव्र था। जिसके कारण 1915 ई. में सर्व हितकारी वाचनालय मीठालाल व्यास के आशीर्वाद से सागरमल गोपा व उसके साथियों द्वारा स्थापित किया गया।
- **मुख कार्यकर्ता/नेता:** मीठालाल व्यास, सागरमल गोपा, शिवशंकर गोपा, लालचंद जोशी, जीवनलाल
- **सागरमल गोपा की भूमिका:** 1940 में "जैसलमेर में गुंडाराज" और "आजादी के दीवाने" पुस्तकें लिखकर

	सिरोही प्रजामण्डल	1939	गोकुल भाई	गोकुल भाई	धर्मचन्द्र सुराणा, रामेश्वरदयाल, रूपराज, जीवनमल, घासीलाल चौधरी, पूनमचन्द
6.	बीकानेर राज्य प्रजामण्डल (कलकत्ता)	1936	मघाराम वैद्य	मघाराम वैद्य	लक्ष्मणदास स्वामी एवं अन्य राजस्थानी प्रवासी
	बीकानेर प्रजामण्डल	1936	मघाराम वैद्य	मघाराम वैद्य	लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल, बाबू मुक्ता प्रसाद, गंगाराम कौशिक
	बीकानेर राज्य परिषद्	1942	रघुवरदयाल गोयल	रघुवरदयाल गोयल	लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल, बाबू मुक्ता प्रसाद, गंगाराम कौशिक
7.	कोटा प्रजामण्डल	1939	पं. नयनूराम शर्मा	पं. नयनूराम शर्मा	पं. अभिन्न हरि, तनसुखलाल मित्तल, शंभूदयाल सक्सेना, बेनी माधव प्रसाद
8.	मारवाड़ लोक	1938	जयनारायण व्यास	रणछोड़दास	आनन्दराज सुराणा और भंवरलाल
9.	मेवाड़ प्रजामण्डल	1938	माणिक्यलाल वर्मा	बलवंत सिंह मेहता	माणिक्य लाल वर्मा, भूरेलाल बयां, भवानी शंकर वैद्य, जमनालाल वैद्य. परसराम, दयाशंकर श्रोत्रिय
10.	अलवर प्रजामण्डल	1938	पं. हरि नारायण शर्मा	पं. हरि नारायण शर्मा	कुंजबिहारी मोदी, लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, इन्द्रसिंह आजाद, नत्थू राम मोदी, मंगलसिंह
11.	भरतपुर प्रजामण्डल	1938	किशनलाल जोशी	गोपीलाल यादव	रेवती शरण शर्मा, मा. आदित्येन्द्र, ठा. देशराज, मोतीलाल यादव, लच्छीराम, मुहम्मद अली, कुंज बिहारी मोदी, रमेश स्वामी, जुगल किशोर चतुर्वेदी
12.	शाहपुरा प्रजामण्डल	1938	रमेशचन्द्र ओझा	रमेशचन्द्र ओझा	लादूराम व्यास, अभयसिंह, गोकुललाल असावा, लक्ष्मीकांत कोटिया, अभयसिंह डांगी
13.	धौलपुर प्रजामण्डल	1938	ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु	कृष्ण दत्त पालीवाल	जौहरी लाल इन्दु, मूलचन्द, केश्वदेव,केदारनाथ
14.	करौली प्रजामण्डल	1938	त्रिलोकचन्द्र माथुर	त्रिलोकचन्द्र माथुर	चिरंजीलाल शर्मा, कुंवर मदन सिंह
15.	किशनगढ़	1939	कांतिलाल चौथानी	कांतिलाल चौथानी	जमालशाह
16.	जैसलमेर राज्य प्रज्ञा परिषद (जोधपुर)	1939	शिव शंकर गोपा	शिव शंकर गोपा	मदनलाल पुरोहित, ललिषद जोशी, जीवनलाल कोठारी, जीतूमल तथा मोहनलाल
	जैसलमेर राज्य प्रजामण्डल	1945	मीठालाल व्यास	मीठालाल व्यास	मीठालाल व्यास एवं अन्य साथी
17.	कुशलगढ़ प्रजामण्डल	1942	भंवरलाल निगम	कन्हैयालाल सेठिया	पन्नालाल त्रिवेदी एवं अन्य साथी
18.	डूंगरपुर प्रजामण्डल	1944	भोगीलाल पण्ड्या	भोगीलाल पण्ड्या	शिवलाल कोटड़िया, हरिदेव जोशी, गौरीशंकर उपाध्याय
19.	बूँदी राज्य लोक परिषद	1944	मेहता	हरिमोहन माथुर	नित्यानन्द नागर, गोपाल कोटिया, गोपाललाल जोशी, मोतीलाल अग्रवाल, पूनमचन्द

20.	बाँसवाड़ा प्रजामण्डल	1945	भूपेन्द्र त्रिवेदी	भूपेन्द्र त्रिवेदी	धूलजी भाई, मणिशंकर, चिमनलाल, मोतीलाल, लक्ष्मणदास
21.	प्रतापगढ़ प्रजामण्डल	1945	अमृतलाल पायक	अमृतलाल पायक	चुन्नीलाल प्रभाकर एवं अन्य साथी
22.	झालावाड़ 'प्रजामण्डल	1946	मांगीलाल	मांगीलाल	कन्हैया लाल मित्तल, मकबूल आलम और तनसुखलाल, रामनिवास शर्मा मदनगोपाल, रतनलाल,

अभ्यास प्रश्न

1. अजमेर-मेरवाड़ा का राजस्थान में कब विलय हुआ ?
(a) 1 नवम्बर, 1956
(b) 8 नवम्बर, 1948
(c) 10 अप्रैल, 1952
(d) 2 जनवरी, 195 (a)

2. निम्न में वे रियासतें, जो पाकिस्तान में मिलना चाहती थीं-
(a) धौलपुर व जैसलमेर
(b) जयपुर व जोधपुर
(c) जैसलमेर व बीकानेर
(d) धौलपुर व करौली (d)

3. 15 मई, 1949 को गठित संयुक्त वृहत्तर राजस्थान के प्रधानमंत्री थे –
(a) जयनारायण व्यास
(b) माणिक्य लाल वर्मा
(c) शोभाराम कुमावत
(d) हीरालाल शास्त्री (d)

4. राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया के दौरान राज्य की राजधानी के मुद्दे को सुलझाने हेतु किसकी अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था-
(a) नगेन्द्र सिंह
(b) वी. पी. मेनन
(c) के. एम. मुंशी
(d) बी. आर. पटेल (d)

5. स्वतंत्रता के समय राजस्थान किस श्रेणी का राज्य था?
(a) अ श्रेणी
(b) ब श्रेणी
(c) स श्रेणी
(d) इनमें से कोई नहीं (b)

6. राजस्थान के एकीकरण के समय विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए कहा—"मैं अपने डेथ वारण्ट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।" उक्त कथन किस शासक के हैं?
(a) लक्ष्मण सिंह (डूंगरपुर)
(b) भीमसिंह (कोटा)
(c) तेजसिंह (अलवर)
(d) चन्द्रवीरसिंह (बाँसवाड़ा) (d)

7. किस आयोग की सिफारिशों पर आबू दिलवाड़ा तहसीलों एवं अजमेर मेरवाड़ा क्षेत्र को राजस्थान में मिलाया गया?
(a) शंकर राव समिति
(b) राज्य पुनर्गठन आयोग
(c) सत्यनारायण समिति
(d) उपर्युक्त में से कोई नही (b)

8. संयुक्त राजस्थान को वृहद् राजस्थान कब बनाया गया?
(a) 30 मार्च, 1949
(b) 18 अप्रैल, 1948
(c) 15 मई, 1949
(d) 1 नवम्बर, 1956 (a)

9. राजस्थान के एकीकरण का श्रेय किसे दिया जाता है?
(a) हीरालाल शास्त्री को
(b) वल्लभ भाई पटेल को
(c) जयनारायण व्यास को
(d) विजय सिंह पथिक को (B)

10. लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व वाले रियासती विभाग का सचिव किसे बनाया गया?
(a) माणिक्यलाल वर्मा
(b) एन. बी. गाडगिल
(c) वी. पी. मेनन
(d) पी. सत्यनारायण राव (c)

- अजमेर मेरवाड़ केन्द्रशासित प्रदेश था जहां अलग से विधानसभा चलती थी इसे धारा सभा के नाम से जाना जाता था ।
- इसके मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय थे जिन्होंने अजमेर मेरवाड़ के विलय का विरोध किया था ।
- सातवें संविधान संशोधन के वृहद् राजप्रमुख, उप राजप्रमुख, महाराजा प्रमुख पदों की समाप्ति और राज्यपाल का पद सृजित किया गया ।
- सिरोही रियासत का विलय दो चरणों में हुआ था ।
- राजस्थान के एकीकरण का खलनायक कोनार्ड कोर फील्ड् था ।

कला एवं संस्कृति

अध्याय – 1

राजस्थान की वास्तु परम्परा

मंदिर :-

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है।

राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां-

(1.) नागर या आर्य शैली-

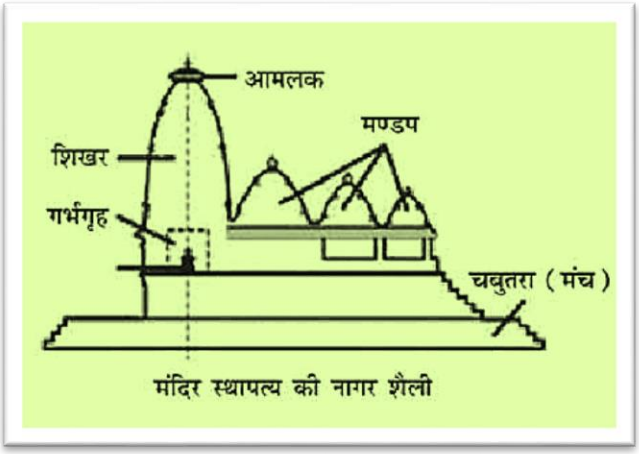

- उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर),दधिमति माता मंदिर (नागौर),औसिया के मंदिर (जोधपुर ग्रामीण)।

(2.) भूमिज शैली

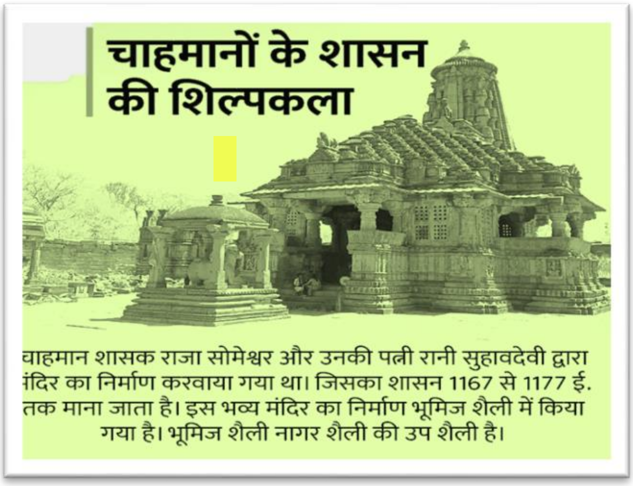

- इसमें प्रदक्षिणा पथ खुला होता है।

भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर है।

- उदयेश्वर महादेव मंदिर, उदयपुर (म.प्र.)
- निलकंठेश्वर मंदिर, उदयपुर (म.प्र.)
- कुंभलगढ़ व आसपास के कुछ मंदिर (राजस्थान)

➢ **भूमिज शैली (Bhumija Style)**
यह भारतीय नागर (North Indian) मंदिर स्थापत्य की एक प्रमुख उप-शैली है, जो विशेष रूप से **मध्य भारत (मालवा, बुंदेलखंड, राजस्थान-गुजरात का कुछ भाग)** में विकसित हुई।

➢ **भूमिज शैली की मुख्य विशेषताएँ**

➢ **शिखर (Tower)**
शिखर **ऊँचा और घुमावदार (curvilinear)** होता है।
इसमें अनेक **छोटे-छोटे उप-शिखर (miniature spires)** एक निश्चित ज्यामितीय क्रम में लगे होते हैं।

ज्यामितीय विन्यास
शिखर पर **क्षैतिज व ऊर्ध्वाधर रेखाओं** का जाल (grid pattern) बनता है।
यह इसे नागर शैली से अलग पहचान देता है।

मूल आधार
मंदिर का गर्भगृह प्रायः **चौकोर या तारामय (stellate)** योजना पर आधारित होता है।

अलंकरण
दीवारों पर **सूक्ष्म मूर्तिकारी और रेखात्मक सजावट** पाई जाती है।
अलंकरण अपेक्षाकृत संतुलित और ज्यामितीय होता है।

क्षेत्रीय प्रसार
यह शैली विशेष रूप से **मालवा (मध्य प्रदेश)** और उससे जुड़े क्षेत्रों में लोकप्रिय रही।

➢ राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- उंडेश्वर मंदिर (बिजौलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (मैनाल, भीलवाड़ा) 1075 ई. अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चितौड़गढ़)।

(3.) द्रविड़ शैली

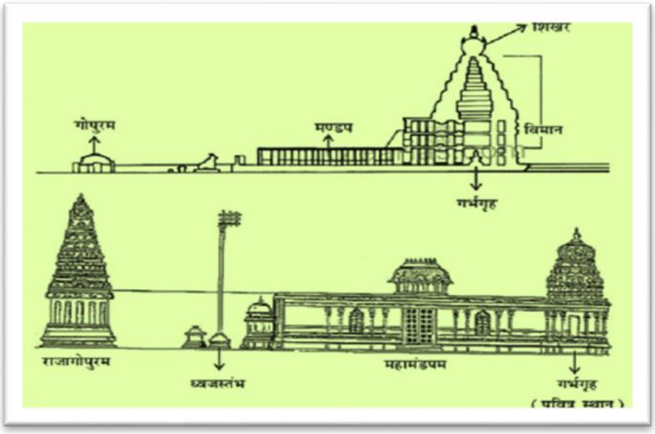

➢ दक्षिणी भारत की शैली।
➢ इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते हैं। जो अलंकृत होते हैं।
➢ इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता है।
➢ मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है।
➢ द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर है।
➢ सभा, नृत्य, पूजा आदि के लिए **विभिन्न मंडप** बनाए जाते हैं।
➢ राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मन्दिर (झालावाड़), हर्षनाथ मंदिर (सीकर)

(4.) पंचायन शैली

➢ इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है।
➢ इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति ,शिव व गणेश के होते है।
➢ ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते है तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता है।

- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढादीत सूर्य मंदिर (कोटा), भंवाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर), खजुराहो का **कंदारिया महादेव मंदिर**।

❖ **राजस्थान के प्रमुख मंदिर**

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर,अजमेर) बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	चार चौमा शिवालय (कोटा), कन्सुआ (कोटा)
गुर्जर प्रतिहार या महामारू शैली (700 ई. से 1000 ई.)	ओसिया के मंदिर (जोधपुर ग्रामीण) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर) , कुभ श्याम मंदिर (चितौड़), कालिका माता मंदिर (चित्तौड़ गढ़) किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर),

	दधिमति माता मंदिर (नागौर) हर्षद माता (आभानेरी,दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य) / महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चिया माता मंदिर (ओसिया, जोधपुर ग्रामीण)

1. राजस्थान के निम्नलिखित मंदिरों में से गुर्जर - प्रतिहार काल में निर्मित मंदिरों को चुनिए।
[RAS. 2016]
(1)आहड़ का आदिवराह मंदिर
(2)आभानेरी का हर्षमाता का मंदिर
(3) राजोरगढ़ का नीलकंठ मंदिर
(4) ओसियाँ का हरिहर मंदिर
कूट :
(a)1 , 2 , 3 और 4 (b)1 , 2 और 4
(c) 1 और 4 **(d)2 और 4**

❖ **सोमेश्वर मंदिर किराडू (बाड़मेर)**

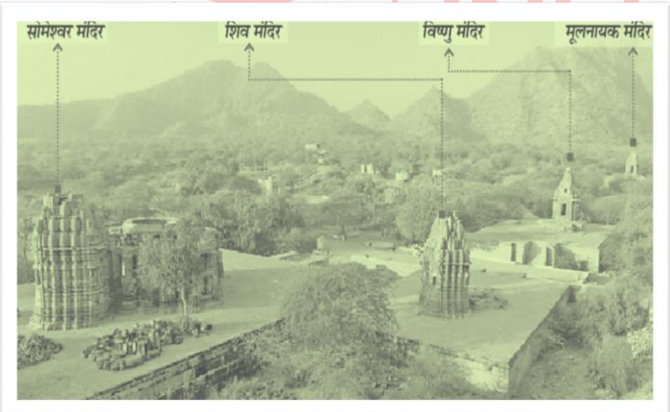

- यह मन्दिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता है।
- इन मन्दिरों में कुल पाँच मन्दिर हैं जिसमें चार भगवान शिव के तथा एक भगवान विष्णु का है।
- इन मन्दिरों का मूल निर्माण की शैली नागर या आर्य शैली है।
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहों कहते है। 1178 ई. में मुहम्मद गौरी ने इस मंदिर पर आक्रमण किया था। इस मंदिर के सामने पहाड़ी पर महिषासुर मर्दिनी की एक त्रिपाद मूर्ति है।

❖ **शीतलेश्वर महादेव का मंदिर (झालावाड़)**

- यह झालरापाटन, झालावाड़ में स्थित है।
- यह मंदिर महामारु शैली में बना है।
- यह राजस्थान का प्रथम तिथियुक्त (689 ई.) मंदिर है।
- इसका निर्माण दुर्गाण के सामन्त वाप्पक ने करवाया।
- यह मन्दिर चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थित है
- झालरापाटन 'घंटी वाले मंदिरों का शहर ' कहलाता है।
- इसे चन्द्रमौलिश्वर महादेव मन्दिर कहा है।
- यहाँ अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति स्थापति है।

❖ **ब्रह्मा जी का मंदिर (पुष्कर, अजमेर)**

- यह पुष्कर, अजमेर में स्थित विश्व का प्रथम ब्रह्मा मन्दिर है।
- इस मन्दिर का निर्माण गोकलचंद पारीक ने करवाया था लेकिन कुछ किंवदंतियों के अनुसार इस मंदिर का प्रारम्भिक निर्माण शंकराचार्य ने करवाया था।
- इस मंदिर को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया गया है।
- इस मन्दिर के परिसर में पंचमुखी महादेव, लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, पातालेश्वर महादेव, नारद और नवग्रह के छोटे - छोटे मन्दिर बने हुए हैं।
- NOTE- राजस्थान में स्थित अन्य प्रमुख ब्रह्मा मंदिर छींछ गाँव (बाँसवाड़ा) में तथा आसोतरा बाड़मेर में स्थित हैं।

ब्रह्मा मन्दिर (छींछ,बाँसवाड़ा) - इस मन्दिर का निर्माण ने 12वीं सदी में जगमाल सिसोदिया करवाया। यहाँ नवग्रहों का मन्दिर तथा ब्रह्म घाट स्थित है।
ब्रह्मा मंदिर (आसोतरा,बाड़मेर) - इसका निर्माण संत खेतरामजी महाराज ने करवाया।

❖ कुम्भलगढ़ का किला

- इस दुर्ग का प्रारम्भिक निर्माण अशोक मौर्य के पुत्र सम्प्रति मौर्य ने जरगा पहाड़ियों में मच्छेद्रपुर के नाम से करवाया।
- नागौर विजय के उपलक्ष में इसका निर्माण 1448-58 ई. राणा कुम्भा ने अपनी प्रिय रानी कुम्भलदेवी के सम्मान में करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार 'मण्डन' था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी, कुम्भलमेरु, मेवाड़ का मेरुदण्ड, मेवाड़ की संकटकालीन आश्रयस्थली, मेवाड़ की आँख भी कहते हैं ।
- अत्यधिक ऊँचाई पर बना हुआ होने के करण अबुल फजल ने कहा था कि इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।
- इस दुर्ग के चारों ओर दीवार है जिसकी लम्बाई लगभग 36 किलोमीटर तथा चौड़ाई 7 मीटर है। जिस कारण से इसे भारत की महान दीवार कहते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसे एट्रुस्कन की संज्ञा दी।
- पन्नाधाय ने उदयसिंह को कुम्भलगढ़ में आशादेव पुरा की सुरक्षा में भेजा।
- इस दुर्ग में राणा उदय सिंह का राज तिलक तथा महाराणा प्रताप का जन्म बादल महल के जूनीकचरी में हुआ।
- इस दुर्ग में एक लघु दुर्ग है जिसे कटारगढ़ के नाम से जानते है जिसमें बादल महल स्थित है जो कुम्भा का निवास स्थान था।
- कटारगढ़ में स्थित मामादेव मन्दिर के पास मामा देव कुण्ड में राणाकुम्भा की उसके पुत्र ऊदा ने हत्या कर दी।
- इस दुर्ग को केवल एक बार 1578 ई. में शाहबाज खां (अकबर का सेनापति) ने 3 बार आक्रमण कर इस दुर्ग को विजित किया।
- इस दुर्ग में 9 द्वार हैं जिसमें हल्ला पोल प्रथम प्रवेश द्वार है।
- इस दुर्ग में उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज की छत्तरी बनी हुई है (12 खम्भों की) इसका वास्तुकार घषनपना है।
- इस दुर्ग में तिलखाना स्थित है जो हाथियों का बाड़ा था।
- दुर्ग में स्थित झाली रानी के महल को झाली रानी का मालिया कहते हैं।
- इस दुर्ग में 1460 ई. में कुम्भलगढ़ प्रशस्ति मामादेव मन्दिर में काली शिलाओं पर संस्कृत भाषा में लिखी गयी है। इस प्रशस्ति की रचना कान्हा व्यास ने की थी।

❖ रणथम्भौर दुर्ग

- वर्तमान में सवाई माधोपुर में स्थित है।
- इसका निर्माण 887 ई. में रणधामदेव चौहान ने करवाया। यह दुर्ग अण्डाकार आकृति में निर्मित हैं।
- यह रण व थंभन पहाड़ी पर स्थित होने के कारण रणथम्भौर कहलाया।
- इस दुर्ग में छह प्रवेश द्वार हैं मुख्य प्रवेश द्वार नौं लखा दरवाजा कहलाता है।
- इसे चित्तौड़गढ़ का छोटा भाई व दुर्गाधिराज भी कहते हैं।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा बाकी सभी दुर्ग नंगे हैं यह बख्तरबंद है।
- इस दुर्ग पर दिल्ली सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी ने 1292 ई. में आक्रमण किया जब सफलता नहीं मिली तब उसने कहा कि ऐसे 10 दुर्गों को मैं मुसलमान के बाल के बराबर भी नहीं समझता।
- अलाउद्दीन खिलजी ने वर्ष 1299 ई. में असफल आक्रमण किया।
- 10 जुलाई, 1301 ई. में इस दुर्ग पर अलाउद्दीन खिलजी का अधिकार हुआ। इस आक्रमण में हम्मीर देव चौहान के नेतृत्व में केसरिया व उसकी रानी रंगदेवी के नेतृत्व में पद्मसर तालाब में जल जौहर हुआ।
- इस प्रकार यहाँ राजस्थान का प्रथम साका हुआ। इस विजय पर अमीर खुसरो का कथन " आज कुफ्र का घर इस्लाम का घर बन गया
- इस दुर्ग में हम्मीर महल, सुपारी महल , जौंरा - भौंरा (अनाज रखने के गोदाम) , हम्मीर कचहरी , रानी कर्मावती की अधूरी छतरी(अधूरे सपनों के महल) जोगी महल , पीर सदरुद्दीन की दरगाह , रानीहाड़ तालाब , लक्ष्मीनारायण मंदिर , गुप्त गंगा स्थित है।
- दुर्ग में स्थित शिव मंदिर में हम्मीर ने अपना सिर चढ़ाया था।
- हम्मीर देव चौहान ने अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्ष के शासन काल की याद में 32 खम्भों की छतरी का निर्माण करवाया जिसे न्याय की छतरी कहते हैं।
- पद्मा तालाब , रणिहाल तालाब , रणत्या डूंगरी आदि स्थित हैं।
- इस दुर्ग में अर्रादा (एक उपकरण था जिससे दुश्मनों पर पत्थर फैंके जाते थे) व मगरनी (दुश्मनों पर ज्वलनशील पदार्थ फैंका जाता था) स्थित है।

- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध है।
- इस किले में रणत भंवर (त्रिनेत्रगणेश जी का मंदिर शादी की पहली पत्रिका यहाँ भेजी जाती है)

❖ **मेहरानगढ़ दुर्ग**

- इस दुर्ग की नींव 12 मई, 1459 ई. को रिद्धि बाई (करणी माता) ने रखी थी।
- राजाराम कड़ेला व मेहरसिंह को इस दुर्ग की नींव में जिंदा दफनाया गया था।
- इसका निर्माण राव जोधा ने करवाया था।
- यह दुर्ग पचेटिया / चिड़िया टूक पहाड़ी पर स्थित है।
- इसे मयूरध्वजगढ़, कागमुखी, गढ़ चिंतामणी, सूर्यगढ़ कहते हैं।
- इस दुर्ग के अधिकांश महलों का निर्माण अभयसिंह ने करवाया था।
- जैकेलिन कनेडी ने इसे विश्व का 8वाँ आश्चर्य कहा।
- रुडयार्ड किपलिंग ने इसका निर्माण परियों व फरिश्तों द्वारा करवाया बताया है।
- टॉड ने कहा इस दुर्ग से पूरे राज्य पर नजर रखी जा सकती है।
- मालदेव ने किले में लोहा पोळ का निर्माण करवाया था।
- अजीतसिंह ने मुगल खालसे की समाप्ति पर फतेह पोळ का निर्माण करवाया।
- मानसिंह ने किले में जयपोळ का निर्माण करवाया (इस पोळ के दरवाजे को निमाज का ठाकुर 'अमरसिंह उदावत' अहमदाबाद से लाया था)।
- इस दुर्ग के लोहापोल दरवाजे पर धन्ना और भींवा (मामा भांजा) की 10 खम्भों की छतरी स्थित है। तथा जयपोल दरवाजे पर किलेदार कीरतसिंह सोढ़ा की छतरी बनी है। जसोल गाँव के कीरत सिंह सोढा, गिंगोली युद्ध के बाद जोधपुर घेरे में मानसिंह की तरफ से लड़ता हुआ मारा गया।
- इस दुर्ग में शम्बुबाण, गजनी खां, किलकिला, जमजमा, कड़क बिजली, नुसरत, गुब्बार, धुड़धणी नामक तोपे स्थित हैं।
- इस दुर्ग की तलहटी में जसवंत थड़ा है जिसे राजस्थान का ताजमहल कहते हैं। इसका निर्माण सरदारसिंह ने अपने पिता जसवंत सिंह द्वितीय की याद में करवाया।
- इस दुर्ग में झरनेश्वर महादेव, ज्वाला माता , मुरली मनोहरजी , आनन्दधन चामुण्डा माता , नागणेची माता का मन्दिर स्थित है।
- यहाँ जहूर खां व भूरे खां की मजार है।
- मालदेव के समय शेरशाह सूरी ने इस किले पर अधिकार कर लिया था तथा एक मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- मोती महल, फूल महल, चौखेलाव महल प्रमुख महल है।
- दुर्ग में शृंगार चौकी है जहाँ राठौड़ों का राजतिलक होता था। शृंगार चौकी का निर्माण तख्त सिंह ने करवाया था।
- जोधा की 'रानी जसमा दे हाड़ी ने 'रानीसर तालाब' बनवाया, इससे मेहरानगढ़ किले को जलापूर्ति की जाती थी।
- इस दुर्ग को 2005 ई. में यूनेस्को अवॉर्ड दिया गया था।

❖ **जैसलमेर दुर्ग**

- जैसलमेर के राजा जैसल (1155 ई.) ने इस किले का निर्माण करवाया।
- जैसलमेर के किले में सर्वाधिक 99 बुर्ज बने हुई हैं।
- इस दुर्ग के बारे में एक कहावत प्रचलित है-" गढ़ दिल्ली गढ़ आगरो अधगढ़ बीकानेर, भलो चिणायो भाटियो सिरे टू जैसलमेर"
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा- घोड़ा किजे काठ का पग किजे पाषाण, अख्तर कीजे लोहे का तब पहुँचे जैसाण।
- यह दुर्ग त्रिकूट पहाड़ी पर बना हुआ है।
- इस दुर्ग में दोहरा परकोटा और आकृति घाघरेनुमा होने के कारण इसे कमरकोट कहते हैं।
- इस दुर्ग में प्रवेश अक्षयपोल से होता है।
- इस दुर्ग को स्वर्णगिरी, भाटी भड़ कीवाड़, पश्चिमी सीमा का प्रहरी, रेगिस्तान का गुलाब, गोहरगढ़ , त्रिकूटगढ़ , जैसाणगढ़ , गलियों का दुर्ग कहते हैं।
- इस दुर्ग के निर्माण में चूने का प्रयोग नहीं हुआ है, इस दुर्ग की छत लकड़ी से बनी है जिस पर गोमूत्र से लेप किया गया है।
- वर्ष 2009 में इस दुर्ग पर ₹ 5 की डाक टिकट जारी की गई।
- जैसलमेर का किला अंगड़ाई लेते शेरे के समान, रेगिस्तान में लंगर डाले जहाज के समान प्रतीत होता है।
- जैसलमेर के किले को स्वर्णगिरि का किला कहते हैं इसे सोनार का किला भी कहते हैं।

❖ देवगढ़ उपशैली

- महाराणा जयसिंह के समय रावत द्वारिका दास चूंडावत ने देवगढ़ ठिकानें (राजसमंद) को 1680 ई. में स्थापित किया तदुपरान्त देवगढ़ शैली का जन्म हुआ।
- इस शैली को सबसे अधिक बढ़ावा **रावत गोकुलदास द्वितीय** के समय मिला, जिन्हें इस शैली का प्रमुख संरक्षक माना जाता है।
- देवगढ़ के **'अजारा की ओवरी'** और **'मोती महल'** के भित्ति चित्र (Frescoes) इस शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
- इस शैली को सर्वप्रथम डॉ. श्रीधर अंधारे ने प्रकाशित किया।
- यह शैली मारवाड़, जयपुर व मेवाड़ की समन्वित शैली है।
- इस शैली का प्रमुख विषय शिकार के दृश्य, राजसी ठाट-बाट, श्रृंगार, प्राकृतिक दृश्य को दर्शाना था।
- इस शैली के प्रमुख चित्रकार कँवला, चोखा, बैजनाथ थे।
- इस शैली में पीले रंग का प्रमुख प्रयोग किया गया हैं।

❖ चावण्ड उपशैली

- 1585 ई. में जब प्रताप ने चावंड को अपनी राजधानी बनाई तब से इसका विकास शुरू हो गया था।
- अमर सिंह का काल मेवाड़ की चावंड शैली का स्वर्ण काल कहलाता है ।
- अमर सिंह प्रथम के समय इस शैली के प्रमुख चित्रकार नसीरदी (निसारदी) ने वर्ष 1605 ई. में राग माला का चित्रण किया।
- इसमें वीर रस, श्रृंगार, ढोला-मारू के प्रसंग, और राग-रागिनी का प्रमुखता से चित्रण किया गया है।
- **रंग और चित्रकारी:** चित्रों में जीवंत और चमकीले रंगों का प्रयोग होता है। भू-दृश्य में अक्सर चट्टानी इलाकों को टीलों के रूप में और ऊंचे वृक्षों को दर्शाया जाता है।
- **प्रतीक:** इसमें पशु-पक्षियों (विशेषकर मोर और घोड़े) और वास्तुशिल्प तत्वों का सुंदर समन्वय मिलता है।

❖ मारवाड़ शैली

- मारवाड़ी शैली के चित्र 1591 ई . के 'उत्तराध्यान सूत्र' तथा 'ओघ निर्यक्ति वृन्ति' में मिलते
- है जो जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, नागौर आदि क्षेत्रों में विकसित हुई, जिसमें **मुगल प्रभाव और स्थानीय लोक कला का मिश्रण** है

❖ जोधपुर उपशैली

- यह चित्रशैली मालदेव के समय से प्रारम्भ हुई थी।
- चोकेलाव महल में मालदेव ने भित्ति चित्र बनवाएँ जो इसकी सैनिक रुचि को दर्शाते हैं। मालदेव ने भित्ति चित्रों में सप्तसती के दृश्य व राम - रावण के युद्ध के दृश्य है।
- जसवंत सिंह प्रथम व मान सिंह (सन्यासी राजा) का समय इस चित्रशैली का स्वर्णकाल था।
- इस शैली में **ढोला-मारू**, मूमल-महिंद्रा, रागमाला, और रामायण जैसे विषयों का प्रमुखता से चित्रण हुआ है। महाराजा मानसिंह के काल में **नाथ संप्रदाय (**नाथ चरित) से संबंधित चित्रों की बहुलता रही।
- इस चित्रशैली पर मुगल शैली का प्रभाव जसवंतसिंह प्रथम तथा मोटा राजा उदय सिंह के समय पड़ा।
- विजयसिंह के समय मारवाड़ चित्र शैली पर वैष्णव सम्प्रदाय का प्रभाव पड़ा जिसमें राधा - कृष्ण के चित्र सर्वाधिक चित्रित किये गये।
- महाराजा तख्त सिंह के समय मारवाड़ चित्रशैली पर यूरोपियन/ कम्पनी चित्रशैली का प्रभाव पड़ा तथा सुनहरे रंगों का प्रयोग होने लगा ।
- महाराजा अभयसिंह के शासनकाल में 1725 ई. में चित्रकार डालचंद ने महाराजा अभयसिंह का नृत्य करते चित्र बनाया।
- इस चित्रशैली पर मानसिंह के समय नाथ सम्प्रदाय से संबंधित चित्र बने।
- वर्ष 1623 ई. में वीरजी नामक चित्रकार ने ' रागमाला' ग्रंथ की रचना की ।
- इस शैली के प्रमुख चित्रकार नारायणदास, अमरदास, बिशनदास, शिवदास, रतन जी भाटी, अमरदास, **दाना भाटी**, छज्जू भाटी, शिवदास, जीतमल और कालू प्रमुख हैं।
- इसमें **लाल और पीले रंगों** का अत्यधिक प्रयोग किया गया है। सुनहरे और चमकीले रंगों का उपयोग मुगल प्रभाव को दर्शाता है।

ढोला मारू

❖ बाहरमासा

❖ **बीकानेर उपशैली**

महाराजा राय सिंह

महाराजा अनूप सिंह

- इस शैली का प्रारम्भ 16वीं सदी में राव रायसिंह के समय चित्रित 'भागवत पुराण' प्रारंभिक चित्र से माना जाता है।
- बीकानेर नेरश रायसिंह मुगल कलाकारों की दक्षता से प्रभावित होकर से उस्ता अली रजा व उस्ता हामिद रुकनुद्दीन को बीकानेर लेकर आए थे।
- बीकानेर के प्रारम्भिक चित्रों में जैन प्रभाव मथेरणों के कारण तथा मुगल प्रभाव मुगलदरबार से आए उस्ता परिवार के कारण था।
- अनूपसिंह के समय इस चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- बीकानेर चित्रशैली में कलाकार का नाम , कलाकार के पिता का नाम व संवत लिखा होता था । ऐसी विशेषता राजपूताने की किसी अन्य चित्रशैली में देखने को नहीं मिलती।
- इस चित्रशैली में मुगल शैली का प्रभाव कल्याण मल के जबकि सर्वाधिक मुगल प्रभाव रायसिंह के समय था।
- महाराजा गजसिंह राठौड़ के शासनकाल में प्रसिद्ध चित्रकार शाह मुहम्मद थे। बीकानेर शैली का सबसे पुराना व्यक्तिचित्र शाह मुहम्मद ने ही बनाया।
- चटक रंगों की बजाय लाल, बैंगनी, सलेटी, जामुनी और बादामी जैसे हल्के रंगों का प्रयोग होता था।
- दरबारी चित्र, हिंदू ग्रंथों (जैसे भागवत पुराण) के चित्रण, ऊँट, हिरण, फूल-पत्तियाँ और रेगिस्तानी परिदृश्य मुख्य हैं।
- जोधपुर शैली के समान लंबी, सुडौल और कोमल नायिकाएँ; पुरुषों की भूरी चेहरे और बड़ी मूँछें, शरीर पर कंठी व जामा।
- **उस्ता कला :** ऊँट की खाल पर सोने और रंगों से बारीक नक्काशी, जो इस शैली की विशिष्ट पहचान है।
- चित्रकारों द्वारा चित्र के साथ नाम और तिथि लिखना इस शैली की एक अनूठी विशेषता थी।
- महाराजा डूंगरसिंह के शासनकाल में बीकानेर चित्रशैली पर यूरोपियन प्रभाव बढ़ने लगा ।
- रुकनुदीन , साहेबदीन , कायम खां , हिसामुदीन उस्ता जाति के कलाकार थे। हिसामुदीन उस्ता दुलमेरा गाँव के थे जिन्हें 1986 में उस्ता कला में पद्मश्री का अवार्ड मिला ।
- **मथेरण कला:** यह बीकानेर की एक पारंपरिक कला है जिसमें चूने और रंगों के माध्यम से धार्मिक चित्र बनाए जाते हैं।
- चन्दूलाल, मुकुंद, मुन्नालाल, मथेरणा परिवार के चित्रकार हैं।
- जर्मनी के चित्रकार ए . एच . मूलर ने अनेक चित्र बनाए जिसमें पृथ्वीराज राठौड़ महाराणा प्रताप को पत्र लिख रहे है यह चित्र बीकानेर संग्रहालय में रखा है।
- रागमाला , शिकार के दृश्य , राज परिवार के दृश्य , राग - रागिनी , बारह मासा बीकानेर चित्रशैली के प्रमुख चित्र हैं।

❖ **किशनगढ़ उपशैली**

- किशनगढ़ की स्थापना 1609 ई. जोधपुर के शासक मोटा राजा उदय सिह के बेटे किशनसिंह द्वारा की गई जो राजपुताना में राठौड़ वंश की तीसरी रियासत थी।
- सावंत सिंह (नागरीदास) का समय इस चित्रशैली का स्वर्णकाल था।
- इस चित्रशैली को प्रकाश में लाने का काम एरिक डिक्सन एवं फैयाज अली ने किया।
- इस चित्रशैली में श्वेत व गुलाबी रंग, मोर , भंवरा , बतख , हंस , केला , गाय , खंजरनुमा आंखे , कमल का फूल व ऋतुओं का चित्रण हुआ है।
- इस शैली की प्रमुख विशेषता 'नारी सौंदर्य' है। यह चित्रशैली कांगड़ा शैली एवं ब्रज साहित्य से प्रभावित है।
- निहालचन्द ने नागर समुच्चय (सावंत सिंह /नागरीदास द्वारा लिखित) के नाम से 75 चित्रित ग्रन्थों की रचना की।
- 1750 ई. में निहालचन्द ने राधा - कृष्ण का चित्र बनाया।
- अमरचन्द ने चांदनी रात की संगीत गोष्ठी नामक चित्र बनाया।
- इस चित्रशैली के प्रमुख चित्रकारों में सूरध्वज, अमीरचंद, धन्ना, छोटू, लाडली दास, रामलाल, सीताराम, नानकराम भंवरलाल हैं।
- इस चित्रशैली का प्रमुख चित्र 'बणी-ठणी' है। सावंत सिंह की प्रेमिका (राधा) का चित्रण, जिसे मोरध्वज निहालचंद ने बनाया और एररिक डिक्सन ने 'भारत की मोनालिसा' कहा।

अध्याय – 5

धार्मिक जीवन

❖ **राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय**

- ➢ प्रदेश में सर्वाधिक हिन्दू पाये जाते हैं, जो वैष्णव धर्म में आस्था रखते हैं ।
- ➢ यहाँ मुख्य रूप से वैष्णव, शैव व शाक्त मत के अनुयायी पाये जाते हैं ।
- ➢ ये मत ही अनेक सम्प्रदायों में बंटे है।
- ➢ राजस्थान में मुख्य रूप से दो सम्प्रदायों के लोग पाये जाते हैं –

1. सगुण सम्प्रदाय –

- इसमें ईश्वर को सर्वस्व मानकार ईश्वर के मूर्त रूप की पूजा – आराधना की जाती है ।
- इसमें रामानुज सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, निर्बाक सम्प्रदाय, नाथ सम्प्रदाय, गौड़ीय सम्प्रदाय, पाशुपत सम्प्रदाय, चरणदासी सम्प्रदाय, मीरा दासी सम्प्रदाय, निष्कलंकी सम्प्रदाय मुख्य रूप से सम्मिलित है ।

2. निर्गुण सम्प्रदाय –

- इस मत के समर्थक ईश्वर को निराकार एवं निर्गुण परमसत्ता मानकर उसकी भक्ति करते है।
- ये निगुर्ण ब्रह्म की उपासना करते है, जो आत्मा व मूर्ति पूजा के विरोधी होते हैं ।
- निर्गुण भक्ति धारा में मुख्यतः - विश्नोई सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय, दादूपंथी सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय, परनामी सम्प्रदाय, निरंजनी सम्प्रदाय, लालदासी सम्प्रदय, कबीर पंथी सम्प्रदाय आदि शामिल है।

❖ **राजस्थान के प्रमुख सगुण भक्ति धारा के सम्प्रदाय**

❖ **मीरा बाई (मीरा दासी सम्प्रदाय)**

- मीरा का जन्म 1498 ई. मेड़ता रियासत के कुड़की ग्राम (वर्तमान ब्यावर) में हुआ ।
- मीरा का जन्म का नाम प्रेमल था, इन्हें राजस्थान की राधा भी कहा जाता हैं ।
- माता का नाम वीर कंवरी तथा पिता का नाम रतनसिंह (राठौड़ वंशी बाजोली के जागीरदार थे) ।
- शिक्षक व धार्मिक गुरू गजाधर थे तथा इनके पुस्तैनी गुरू चम्पा जी थे तथा इनके संत गुरू रैदास थे एवं आध्यात्मिक गुरू इनके दादाजी राव दूदा थे ।
- मीरा का विवाह 1516 ई. में राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से हुआ था । विवाह के कुछ समय बाद ही खातोली के युद्ध (1518 ई) में भोजराज की मृत्यु हो गयी थी ।
- भोजराज कर्मवती हाड़ी के पुत्र थे ।
- विक्रमादित्य द्वारा मीरा को भिन्न-भिन्न प्रकार की यातनाऐं दी गई । जिससे वे वृन्दावन चली गई थी ।
- द्वारिका (गुजरात) रणछोड़ जी की मूर्ति में सन् 1540 में लीन हो गई ।
- इन्होनें सगुण भक्ति पर जोर दिया तथ भक्ति का मार्ग भजन, नृत्य व कृष्ण स्मरण को बताया ।
- इनकी प्रमुख रचनाऐं - नरसी जी को मायरो (मीरा जी के दिशा-निर्देशन में रतना खाती द्वारा रचित) गीतगोविन्द टीका, रुकमणी मंगल नरसी मेहता री हुण्डी, पदावलियाँ आदि ।
- मीरा के दादा जी राव दूदा जी ने मीरा के लिए मेड़ता में आराध्य देव चारभुजा नाथ जी का मंदिर बनवाया व सांगा ने कुम्भश्याम मंदिर के पास कुंवरपदे महल बनवाया ।

❖ **संत गवरी बाई**

- गवरी बाई डूंगरपुर के नागर ब्राह्मण परिवार में जन्मी कृष्णभक्त कवयित्री थी
- इन्हें बांगड़ की मीरा कहा जाता है। जो कृष्ण को पति के रूप में स्वीकार कर भक्ति करती थी ।
- डूंगरपुर के महाराज शिवसिंह ने इनके लिए बालमुकुंद मंदिर बनवाया।

❖ **रामानन्दी सम्प्रदाय**

- यह वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं।
- इसके प्रवर्तक रामानन्द जी थे।
- इनके गुरू रामानुज आचार्य थे
- यह सम्प्रदाय 'विशिष्टाद्वैत' दर्शन पर आधारित है।
- इन्होंने उत्तर भारत में वैष्णव भक्ति को प्रारंभ किया।
- कबीर, रैदास, धन्ना, पीपा इनके शिष्य रहे हैं।
- **इस सम्प्रदाय की प्रमुख पीठे निम्न प्रकार हैं –**

❖ **गलता जी**

- ✓ यह इस सम्प्रदाय की प्रधान पीठ है।
- ✓ इसकी स्थापना कृष्णदास पयहारी के द्वारा की गई।

- ✓ पयहारी जी ने आमेर के शासक पृथ्वीराज की रानी बालाबाई के दीक्षागुरु थे।
- ✓ इन्होंने कापालिक सम्प्रदाय के योगी चतुरनाथ को शास्त्रार्थ में पराजित किया तथा गलता जी में रामानन्दी सम्प्रदाय की पीठ स्थापित की ।
- ✓ इसे जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह का समर्थन मिला।
- ✓ इन्होंने अपने कवि कृष्ण भट्ट के द्वारा रामरासा नामक ग्रंथ लिखवाया ।
- ✓ गलता जी (जयपुर ग्रामीण) को मंकी बैली या उत्तर तोताद्री कहते है।

❖ **रैवासा**

- ✓ इसकी स्थापना कृष्णदास के शिष्य अग्रदासजी ने सीकर के रैवास गाँव में की थी।
- ✓ यहाँ भगवान राम की भक्ति कृष्ण के समान मार्धुय भाव से की जाती हैं ।
- ✓ इसलिए अग्रदासजी के इस मत को रसिक सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता हैं ।

प्रश्न - ईश्वर केवल मनुष्य के सद्गुण को पहचानता है, उसके दुर्गुण व जाति नहीं पूछता है। आगामी दुनिया में कोई जाति नहीं होगी यह सिद्धान्त किस भक्ति सन्त का है
(RAS Exam - 2008)

(a) रामानन्द (b) दादू
(c) नानक (d) रामानुज

❖ **निम्बार्क सम्प्रदाय**

- इसे हंस सम्प्रदाय, सनकादिक सम्प्रदाय, नारद सम्प्रदाय भी कहा जाता हैं ।
- इसके संस्थापक निम्बार्काचार्य जी थे । जो तेलंगाना में ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए ।
- इन्होंने वेदान्त परिजात ग्रंथ लिखा, जिसमें द्वैताद्वेत या भेदाभेद दर्शन का वर्णन हैं ।
- राधा - कृष्ण की युगल आराधना करना ।
- भारत में इसकी मुख्य पीठ वृन्दावन में स्थित हैं, राजस्थान में मुख्यपीठ अजमेर के किशनगढ़ के पास सलेमाबाद में स्थित हैं ।
- अन्य पीठे उदयपुर व जयपुर में भी हैं ।
- मारवाड़ में इसे नीमावत साध के नाम से जानते हैं ।
- **सलेमाबाद पीठ की स्थापना** - परशुराम देवाचार्य जी द्वारा की गई । इन्होंने परशुराम सागर ग्रंथ लिखा । ये निम्बार्कार्चार्य के शिष्य थे ।

❖ **गौड़ीय सम्प्रदाय**

- इस सम्प्रदा के प्रवर्तक माधवाचार्य माने जाते हैं, इन्होने पूर्ण प्रज्ञ भाष्य नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें द्वैतवाद दर्शन प्रतिपादित किया ।
- यह सम्प्रदाय ब्रह्म सम्प्रदाय के नाम से जाने जाते थे, जिसका सर्वाधिक प्रचार-प्रसार गौड़ स्वामी ने किया था, इसलिए यह गौड़ीय सम्प्रदाय कहलाई ।
- इस सम्प्रदाय को चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण लीलाओं के माध्यम से जनजन तक पहुँचाया तथा बंगाल में वैष्णव वाद का जनक माना जाता हैं । इनका जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ था ।
- चैतन्य प्रभू के शिष्य रूप गोस्वामी द्वारा राधा गोविन्द देवजी को राजस्थान में लाकर जयपुर के राजमहलों में प्रतिष्ठित किया गया ।
- जयपुर के महाराज मानसिंह इस सम्प्रदाय से बहुत प्रभावित थे, इन्होंने वृन्दावन में एक मंदिर का निर्माण करवाया तथा जयपुर में कनक घाटी में गोविन्द देव जी मूर्ति स्थापित कर कनक वृन्दावन नाम रखा । जिसे बाद में सवाई जयसिंह ने जयपुर में मंदिर बनवाकर वहाँ स्थापित करवा दिया। जो गौड़ीय सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र हैं ।
- दूसरा केन्द्र मदनमोहन (करौली) है । इसका निर्माण गोपालसिंह ने 1748 ई. में करवाया ।
- इस सम्प्रदाय की एक शाखा सखी सम्प्रदाय के नाम से जानी जाती हैं, जिसकी स्थापना हरिदास जी ने की, जो कृष्ण को सखी मानकर पूजते थे ।

❖ **वल्लभ सम्प्रदाय**

❖ इसके प्रर्वतक वल्लभाचार्य थे ।

❖ इनका जन्म 1478 में बैशाख शुक्ल 11 को वाराणसी (उत्तर प्रदेश)में हुआ ।

- **चामुंडा माता (अजमेर)**
- सन् 1183 ई. में महामाया चामुण्डा देवी का यह भव्य सुन्दर मन्दिर पृथ्वीराज चौहान ने निर्मित करवाया था।
- देवी चामुण्डा - पृथ्वीराज चौहान की तथा चारण भाट कवि चंदबरदाई की इष्ट देवी थी।

- **जोगणिया माता**
- जोगणीया माता का मंदिर भीलवाड़ा जिले के मंडलगढ़ कस्बे से 24 km दूर उपरमाल पठार के दक्षिणी छोर पर स्थित है।
- यहाँ मुर्गे छोड़कर जाने की भी प्रथा है।

- **वीरातरा माता**
- चौहटन (बाड़मेर)
- भोपों की कुलदेवी।
- यहाँ में ले में नारियल की जोत जलाई जाती है तथा बकरे की बलि दी जाती है।
- **राठासण देवी**:- मेवाड़ में
- **सुराणा देवी**:- गोरखाण (नागौर) में।
- **छीक माता**:- जयपुर
- **दृष्टा माता**:- कोटा कोटा राजपरिवार की कुलदेवी।
- **गायत्री माता**:- पुष्कर (अजमेर)
- **सावित्री माता**:- पुष्कर (अजमेर)। भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को विशाल मेला लगता है।
- **उंठाला माता**:- वल्लभनगर (उदयपुर)
- **मातर माता**:- सिरोही
- **हिचकी माता**:- सनवाड़, जयपुर

अभ्यास प्रश्न

1. सुगन चिड़ी को किस लोक माता का स्वरुप माना जाता जाता है ?
A. शीतला माता B. नारायणी माता
C. स्वांगिया माता D. नागणेची माता **(C)**

2. बीकानेर के राठौड़ों की इष्टदेवी कौन थी ?
A. नागणेची माता B. नारायणी माता
C. करणी माता D. तेमडाराय माता **(C)**

3. करणी माता के वंशज कहलाते हैं ?
A. काबा B. देपावत
C. चिरजा D. मंढ **(A)**

4. जीण माता के मंदिर का निर्माण किसने करवाया था?
A. हमीर देव
B. राजा हट्टड़
C. पृथ्वीराज चौहान तृतीय
D. महाराणा कुंभा **(B)**

5. कछवाहा वंश के इष्ट देवी/आराध्य देवी कौन है ?
A. शीला माता B. जमुवाय माता
C. सकराय माता D. सच्चियाय माता **(B)**

6. राजस्थान की एकमात्र लोक देवी कोनसी है जिसकी खंडित रूप में पूजा होती है ?
A. जमुवाय माता B. शीला माता
C. शीतला माता D. ब्राह्मणी माता **(C)**

7. किस लोक देवी के मंदिर के सामने बोहरा भगत की छतरी स्थित है ?
A. शीतला माता B. नारायणी माता
C. कैला देवी D. शीला देवी **(C)**

8. किस लोक देवी के मंदिर में मुगल बादशाह सवा मन तेल पहुंचाते थे ?
A. जीण माता B. करणी माता
C. शीला माता D. शीतला माता **(A)**

9. राजसमंद झील में किस लोकदेवी का स्थान (मंदिर) स्थित है?
A. घेवर माता B. जीण माता
C. तनोट माता D. आवड़ माता **(A)**

10. बाणमाता कौन से राजपूत वंश की कुल देवी है ?
A. राठौड़ वंश B. सिसोदिया वंश
C. चौहान वंश D. गुहिल वंश **(D)**

❖ राजस्थान के लोक देवता

- राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में चबूतरेनूमा बने हुए लोकदेवताओं के पूजा स्थल को 'देवरे' कहलाते हैं तो अलौकिक शक्ति द्वारा किसी कार्य को करना अथवा करवा देना 'पर्चा देना' कहलाता है।
- मारवाड़ के पंच पीर - (1) गोगाजी (2) पाबूजी (3) हड़बूजी (4) रामदेव जी (5) मेंहाजी।
पाबू, हड़बू, रामदे, मांगलिया मेंहा।
पाँचों पीर पधारजो गोगाजी गेहा।

क्षेत्रपाल राजस्थान की संस्कृति में एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है (RAS 2015)
(a) ग्राम अधिकारी के रूप में
(b) ग्राम देवता के रूप में
(c) एक संत के रूप में
(d) एक उपासक के रूप में

- **गोगाजी चौहान**